सत्याग्रह नदी संरक्षण 2008

नदी संरक्षण एक बड़ा लक्ष्य है, क्योंकि कोई भी नदी एक मायने में छोटी नहीं होती; लेकिन जल बिरादरी के साथियों ने छोटी-छोटी कोशिशों से शुरूआत की। गत वर्ष अप्रैल 2007 में गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति के साझे से जल बिरादरी ने जल सत्याग्रह का निश्चय किया। उसे ही वर्ष 2008 के लिए नदी संरक्षण सत्याग्रह का रूप दिया ।

वर्ष 2008 के नए संकल्प और नई दिशा में काम करने के लिए जल बिरादरी के पास अनुभवों की जो थोड़ी-बहुत पूंजी थी, वह मुख्य चार घटनाक्रम थे :

<u>पहला</u> - अरवरी नदी पर मछली के ठेके को रद्द कराने में तरुण भारत संघ व अरवरी संसद का संघर्ष।

<u>दूसरा</u> - जलयात्रा के दौरान छत्तीसगढ़ जल बिरादरी की पहल पर रेडियस नामक कंपनी को दिए शिवनाथ नदी के पट्टे को रद्द कराने का अनुभव ।

<u>तीसरा</u> - उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक प्रदूषित हिंडन की सहायक नदी कृष्णी के प्रदूषकों के खिलाफ इकाईयों को नोटिस।

<u>चौथा</u> - दिल्ली में यमुना नदी भूमि पर व्यावसायिक निर्माण के विरोध में दिल्ली के किसान व जल बिरादरी का यमुना सत्याग्रह।

इनमें सबसे व्यापक और अलग अनुभव यमुना सत्याग्रह का था। उक्त चार अनुभवों की पूंजी के साथ जल बिरादरी ने एक जनवरी, 2008 से 31 मार्च तक व्यापक रूप से देशभर में नदी बचाओ यात्रा-सत्याग्रह-कार्यक्रमों में शिरकत व पहल शुरू की। जलबिरादरी के साथियों ने 20 मार्च को जलाधिकार दिवस और गंगा दशहरा को 'नदी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। सरकारों के साथ भी विचार मंथन शुरू किया।

उत्तराखण्ड, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि राज्यों में अच्छे निर्णय हुए... अच्छी पहल हुई। उत्तर प्रदेश की सरकार गोमती-सई नदी को लेकर थोड़ी चेती जरूर; लेकिन इस जागृति को टिकाऊ बनाने की कोशिशों को और ताकत देने की जरूरत है। जल बिरादरी ने तय किया कि एक अप्रैल से सरकारों पर दबाव डालने का काम शुरू किया जाए, ताकि वे नदी संरक्षण नीति बनाकर नदियों को संरक्षित करने के काम को अपनी प्राथमिकता बनाएं।

सरकार में भी कही-कही अच्छे लोग होते हैं। उन्हें ताकत देने का काम जन समुदाय व संस्थाओं को करना चाहिए। प्रो. जी. डी. अग्रवाल भी कभी सरकारी तंत्र का हिस्सा रहे हैं, लेकिन बसंत पंचमी को उन्होंने ही बड़ी पहल की। उन्होंने घोषणा की कि गंगोत्री से

उत्तरकाशी के बीच भागीरथी के प्रवाह को बाधा मुक्त करने की मांग नहीं मानी गई, तो वे आमरण अनशन करेंगे। अनशन हुआ। अंतत: राज्य सरकार ने भैरु घाटी फेज 1 व फेज 1ट पाला मनेरी परियोजना रद्द करने की मंशा जाहिर की। इसकी बिना पर प्रो. अग्रवाल ने अपना अनशन स्थल बदल कर दिल्ली किया। 30 जून को भारत सरकार ने इस अनशन का सम्मान करते हुए भागीरथी में नैसर्गिक प्रवाह सुनिश्चित करने हेतु एक समिति का गठन की घोषणा की। समिति तीन महीने में अपने 10 सुझाव सरकार के सामने रखेगी। यह एक बड़ा काम हुआ कि अब हमारी सरकारों ने सुनने की आदत डाल ली है।
एक दिलचस्प अनुभव यह हुआ कि जब हमने मांगपत्र तैयार करते वक्त नदी के 'पारिस्थितिकीय प्रवाह' के मानक तय कर उनकी पालना सुनिश्चित करने का प्रश्न उठाया, तो पता चला कि यह विषय अभी भारतीय शिक्षा संस्थानों में इस रूप में पढ़ाया ही नहीं जाता। इसलिए अभी सरकार देश को किसी एक भी नदी के पारिस्थितिकीय प्रवाह सुनिश्चित करने की दिशा में नहीं सोच सकी हैं। इस दिशा में जल बिरादरी के साथी पहल कर रहे हैं। शीघ्र ही पाठ्यक्रम तैयार कर गंगा के प्रति आस्था रखने वाले किसी विश्वविद्यालय में इससे सम्बन्धित शिक्षण शुरु हो जायेगा; ऐसी उम्मीद हैं।

जल बिरादरी मानती है कि नदियों के साथ यदि सबसे गहरा रिश्ता किसी का है, तो वे हैं भारत की नारियां और हमारे साधु-सन्त-मौलवी और फकीर। इन्हें इनके रिश्ते व नदी को पुन: सदानीरा-पवित्र बनाने में संभावित भूमिका की तलाश करनी चाहिए। जल बिरादरी इस एहसास को जगाने में लगी हैं। इस बीच देश की कई नदियों में छोटी-बड़ी पहल शुरू कराने में जल बिरादरी सफल रही। जिनकी विस्तृत चर्चा अगले पन्नों में दर्ज हैं। नतीजे भी आए हैं। यदि इन नतीजों से सीख कर आगे बढ़ना हैं, तो जरूरी है कि नदी संरक्षण कोई एक अभियान न होकर हमारी एक आदत का हिस्सा बन जाए। जो जहां है, वहीं रह कर नदी संरक्षण के अपने संस्कार को पुनर्जीवित करें। यूं इसके लिए किसी झंडे बैनर की जरूरत नहीं है, लेकिन आज भारत में नदियों को शोषित, प्रदूषित व बाधित करने वाला माफिया काफी एकजुट दिखाई देता है। अत: जरूरी है कि संकट में साझे का मानस बने। नदी-सन्त-समाज-स्वयंसेवी संगठन-सरकार सब एक हों। यह तभी सम्भव है कि जब आपस में संवाद बने, आपसी अविश्वास दूर हो, समझ बनें। इसी प्रयास में जलबिरादरी जुटी है।... आप भी जुटें, पहल करें। अकेले या दुकेले की चिन्ता न करें। एक दिन काफिला भी बन जाएगा और मंजिल भी मिल जायेगी।

unh yksdkns’k & 2008

1- jk”Vªh; /ot] Ik’kq i{kh] tho vkfn izrhd dh Hkkafr ^xaxk&,d jk”Vªh; unh* ds :i esa ?kksf”kr ,oe~ lajf{kr gksA izns’k Hkh viuh ,d eq[; unh dks ^izknsf’kd unh* ds :i esa ?kksf”kr ,oe~ lajf{kr djsaA

2- dsanz o izns’k dze’k% viuh jk”Vªh; rFkk izknsf’kd unh uhfr cuk;saA

3- ufn;ksa ds Hkw&mi;ksx o LokfeRo esa dHkh Hkh--- fdlh Hkh izdkj dk ifjorZu oS/kkfud rkSj ij ekU; u gksA

4- izR;sd unh fo’ks”k gsrq fo’ks”k ikfjfLFkfrdh; izokg ds ekud fu/kkZfjr gks vkSj gj fLFkfr esa mldh ikyuk lqfuf’pr djus dh O;oLFkk cusA

5- unh iznw”k.k fu;a=.k gsrq ljdkj] LFkkuh; leqnk;] iapk;r] uxjikfydk o Lo;alsoh laxBuksa ds izfrfu& f/k;ksa dkss tksM+dj unhokj fuxjkuh bdkb;ksa dk xBu ,oe~ mUgs dkjZokbZ ds oS/kkfud vf/kdkj fn, tk,aA

6- ufn;ksa ds iznw”k.k fu;a=.k dh tckcnsgh r; djsaA ty iznw”k.k ls gksus okyh chekjh o ekSrksa ds ekeyksa ds u flQZ iznw”kdksa] cfYd iznw”k.k fu;a=.k gsrq tckcnsg fu;a=.k ra= ds f[kykQ Hkh nhokuh vnkyrksa ds eqdknek pykus dh izko/kku nksA vkf[kjdkj fdlh dh gR;k djus okyk flfoy dksVZ esa flQZ tqekZuk Hkkjdj dSls cp ldrk gSA

7- unh esa eSyk Mkyuk ,d cM+k izkd`frd vijk/k gSA vr% ;g lqfuf’pr gks fd xzke iapk;rs] uxj fuxe o ikfydk vius lhost dpjs dks cxSj ‘kksf/kr fd;s unh esa dnkfi u MkysaA iwjs ns’k esa ty ‘kks/ku dh ,d tSlh iz.kkyh dkjxj ugh gqbZ gSA vr% LFkkuh; ifjfLFkfr ds vuqlkj LFkkuh; lek/kku o lalk/ku dks izkFkfedrk nsaA

8- izR;sd unh ds loksZifj ck<+ fcUnq ds nksuks vksj de ls de 100 eh- pkSM+s {ks= dks O;kid Lrj ij gjh ?kkl rFkk LFkkuh; tSofofo/krk dk lEeku djus okyh ouLifr ds l?ku {ks= ds :i esa laif{kr .oe~ laof)Zr fd;k tk.A

Lkj;w yksdkns'k

1- lj;w gekjh ekr` Lo#Ikk gSA eka gesa ikyrh&iks"krh djrh gSA vr% ge mRrj Hkkjr ikoj dkjiksjs'ku }kjk bldk fouk'k ugha gksus nasxsA
2- lj;w dk ty&taxy] tehu gekjh thfodk gSA thfodk dk gd ge ugha u"V gksus nsaxsA mRrj Hkkjr gkbZMªks dk dke ge lj;w esa jksd nsaxsA ljdkj vkt gh dk;Z jksd nsa] rks vPNk gksxk(vU;Fkk gkfu ds fy, ljdkj vkSj dEiuh ftEesnkj gksxhA gekjh gkfu dh {kfriwfrZ ljdkj ;k mRrj Hkkjr gkbZMªks dkjiksjs"ku djsxhA
3- lj;w gekjh lH;rk vkSj laLd`fr dk vk/kkj gSA blesa fodkl dk ykyp fn[kk dj bls u"V djuk gekjs ekSfyd vf/kdkj vkSj izd`fr ds igys gd dk guu gSA bldh j{kk gsrq geus lj;w cpkvks vkUnksyu 'kq# fd;k gSA ;g vkUnksyu izd`fr&/kjrh&unh dh j{kk dk laoS/kkfud dk;Z gSA ge Hkkjr yksdrU= esa vius laoS/kkfud j{kk gsrq tkjh j[ksaxsA gesa ;g ugha djuk iM+s] blfy, ljdkj rqjUr lj;w unh ij gks jgs fouk"k dks jksdsaA
4- ge izd`fr laj{k.k ds lkFk [ksrh&taxy&tehu dk lao)Zu }kjk fodkl djsaxsA ge lj;w unh dh gR;k djus okyh ;kstuk dk fojks/k djrs gSaA ge fouk"k okys fodkl dks jksdsxsaA
5- fgeky; HkwL[kyu izHkkfor {ks= gSA lj;w dks Vuy esa Mkyuk ?kkrd gSA gekjh vk[ksa bls igkfM+;ksa esa cgrs ns[kuk pkgrh gSA ge blds cgko dks ckf/kr ugha gksus nsaxsA

सई बचाओ आंदोलन

उत्तर प्रदेश के छः प्रमुख जिलें हरदोई, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, प्रतापगढ़ और जौनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों को सींचने वाली प्रमुख जीवनदायिनी नदी-सई का जल पूरी तरह जहरीला हो चुका है। उन्नाव व लखनऊ में सई की धारा सूखने का समाचार भी मिला। कमी लाखों लोगों की आजीविका का प्रमुख स्त्रोत रही सई नदी का जल... अब मौत, भूखमरी, पलायन और बेकारी का सबब बनता जा रहा है। सई नदी क्षेत्र लाखों परिवारों के लिए सिचाई, पेयजल, मछली, बालू, खेती और बागवानी के प्रमुख संसाधन के रूप में जीवन का प्रमुख आधार रहा है। आज यह भी एक गंदे नाले के रूप में तब्दील

हो गई है। प्रदूटित जहरीले पानी के कारण पद्गु-पक्षी-मवेद्गी-मनुटय आदि अनेक बीमारियों से ग्रसित हो असमय काल-कलवित हो रहे है। अनादि काल से प्रवाहित सई नदी का वर्णन वेद, द्गिवपुराण, श्री रामचरित मानस, द्गिवपुराण, दुर्गासप्तसती से लेकर बौद्ध स्मृतियों तक में है। यह साबित करता है कि आजीविका के साथ-साथ सई नदी करोड़ों लोगों के आस्था और विटवास का भी प्रतीक है। भारत वर्टा की विद्गव प्रसिद्ध राटट्रीय नदी-गंगा की प्रमुख सहचरी नदियों में से एक ...गोमती का जौनपुर में आलिंगन करने वाली सई नदी खुद खतरे में है।

सई नदी की दुर्दद्गाा की सर्वाधिक दोद्गाी रायबरेली स्थित भवानी पेपर मिल को प्रदूटाण नियंत्रण बोर्ड द्वारा 'ग्रीन कार्ड' दिया जाना यह साबित करता है कि सभी जीवनदायिनी नदियों के प्रति सरकारी रवैया क्या है ?

सई नदी की बर्बादी और मेहनतकद्गा समुदायों की तबाही से चिंतित तटवासी विगत ढाई-तीन वर्टाों से संघर्टारत है। दिसम्बर 2005 में तटवासियों द्वारा गठित सई नदी बचाओ संघर्टा समिति द्वारा धरना, प्रदर्द्गान और ज्ञापनों के माध्यम से मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और प्रदूटाण नियंत्रण बोर्ड को अवगत कराया गया, किन्तु कोई कार्रवाई नहीं हुई। जनवरी 2006 में जौनपुर जनपद के दर्जनों गावों के पीड़ित सैकड़ों परिवारों ने मल्लाह बाहुल्य गांव हरखपुर में सत्याग्रह छेड़ दिया। सई बचाओ आन्दोलन के सूत्रधार और जल बिरादरी के साथी द्विजेन्द्र विद्गवात्मा के नेत५त्व में पीड़ित गांववासियों ने 72 घंटे का उपवास रखा और प्रधानमंत्री, भारत सरकार को ज्ञापन भेजकर हस्तक्षेप की मांग की। देद्गा के जाने-माने गांधीवादी समाजसेवी डा. एस.एन. सुब्बा राव... खुद मैंने भी हरखपुर पहुंचकर आन्दोलन को गति देने में साझेदारी की।

जन पंचायतों के माध्यम से मुहिम को आगे बढ़ाते हुए मई 2008 को समिति ने महामहिम राज्यपाल व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेद्गा को ज्ञापन भेजकर-सई नदी को बचाने, पीड़ितों को राहत देने व दोटियों को दण्डित करने की मांग पर पुन: जोर देते हुए 'सई पैकेज एवम् 'सई-कार्य योजना' का सुझाव दिया है। प्रदेद्गा सरकार ने एक सई संरक्षण समिति के गठन की औपचारिकता निभा कर इतिश्री कर ली; हुआ कुछ नहीं। अत: अब 'सई बचाओ संघर्टा समिति' ने व्यापक जनान्दोलन का मन बना लिया है। राजनैतिक इच्छाद्गाक्ति के अभाव और प्रद्गाासनिक उदासीनता के परिणामस्वरूप प्रदेद्गा की अन्य कई नदियों की हालात बद से बदतर हैं।

द्गिाक्षकों, वकीलों, पत्रकारों, डाक्टरों, समाजसेवियों व धर्मावलम्बियों की बढ़ रही भागीदारी और जनसमर्थन यह दद्गााता है कि जलस्वराज के लिए व्यापक हस्तक्षेप से ही रास्ता निकलेगा।

बुंदेलखण्ड़ में अकाल और पूर्वांचल में गहराता भू-जल संकट नदी जल की महत्ता को स्वत: प्रमाणित करता है। इसी कड़ी में सई बचाओं संघर्टा समिति, एकता परिटाद और जल बिरादरी ने पीड़ित तटवासियों, प्रभावित अकाल पीड़ितों तथा गांधीवादी संगठनों को संगठित कर प्रदेद्गाव्यापी

जल सत्याग्रह के रूप में प्रभावी पहल का नि६चय किया है। इसी कड़ी में वंचितों, पीड़ितों, ५ाोटितों की महापंचायत का आयोजन अक्टूबर, 2008 में किया जा रहा है। हम सभी को सक्रिय सहभागिता का न्यौता देते हैं।

हिण्डन प्रदू८ाण मुक्ति अभियान

हिंडन सहारनपुर से निकल कर मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद होते हुए गौतमबुद्ध नगर में यमुना में समाहित होती है। हिंडन जल बिरादरी लम्बे अरसे से इसकी प्रदू८ाण मुक्ति की दि६ाा में सोच रही थी। हिंडन की मिट्‌टी से मेरा जन्म का रि६ता है। लगातार चर्चा के बाद हिंडन के दोनों तट पर मैंने स्वयं पूरे दो साल साथ रह कर एक-एक हफ्ते लम्बी पदयात्राएं की, जगह-जगह चर्चा की, सवाल उठाए। इस पूरे दौर में डा. जे. बी. सिंह, प्रो. पी. के. ५ार्मा, रमे६ा ५ार्मा, डा. कृ८णपाल सिंह, स्वामी यज्ञमुनि, विक्रम ५ार्मा सरीखे साझीदार बने। तरुण जल विद्यापीठ के छात्रों ने नदी प्रदू८ाण व प्रभाव का जन साधारण की दृ८िट से अध्ययन किया। पंजाब कृ८िा वि६वविद्यालय के प्रो. रेड्‌डी और डा. भट्‌टी ने हिंडन की तकनीकी रिपोर्ट तैयार की। इस बीच तय हुआ कि पूरी नदी पर एक साथ कार्रवाई सम्भव नहीं है। अत: प्रो. एस प्रका६ा और प्रो. पी. के. ५ार्मा के अगुवाई में कृ८णा नदी के गावों को एकजुट कर सामाजिक व कानूनी कार्रवाई की। प्रदू८ाकों के खिलाफ नोटिस जारी हुए। नतीजतन कई फैक्टरियों को अपना कचरा समेटना पड़ा। सहारनपुर का गांव भनेड़ा -खेमचन्द 'संघ८ा से सफलता' की मिसाल बन गया। अब ये संघ८ा प्रेरणा बन कर नदी प्रदू८ाण के खिलाफ अलख जगा रहा है।

हिंडन नदी पर स्थित वाल्मीकि आश्रम, बालैनी के पास गंग नहर बहती है। स्थानीय निवासियों ओर संगठनों के नेतृत्व में जल बिरादरी सरकार पर ये दबाव बनाने में सफल रही कि नहर का पानी हिंडन में छोड़ा जाए। परिणामस्वरूप हिंडन का पानी बेहतर हुआ है। इससे हमारी चिन्ता कम जरूर हुई है, लेकिन अभी हिंडन को पूरी तरह स्वस्थ - समृद्ध व आस्था के पूर्व मुकाम पर लौटाने के मार्ग में चुनौतियां बहुत हैं। आप इस बाबत नदी क्षेत्र के निम्न लिखित सक्रिय साथियों के साथ साझा बना हिडन प्रदू८ाण मुक्ति अगुवा बनेंगे... ऐसा हमारा वि६वास हैं।

बादस नदी

उत्तर भारत में गजरोला में बादस नदी को प्रदू८ाणमुक्त बनाने की यात्रा किसानों ने की तथा सम्मेलन आयोजित करके मिले मालिकों पर दबाव बनाया। बिजनौर में भी इस दि६ाा में कार्य ५ाुरू हुआ।

सोनभद्र

उ.प्र. में सोनभद्र नदी के जलग्रहण क्षेत्रों में बनवासी सेवा आश्रम की प्रमुख डा. रागिणी प्रेम ने आदिवासियों के साथ मिलकर बहुत अच्छा जल संरक्षण कार्य किया है।
अब ५ाोभा बहन भी इस क्षेत्र को प्रदू८ाण मुक्त बनाने में प्रो. गुरूदास अग्रवाल जी के साथ जुड़ी है। डा. ब्रह्मजीत यहां के लोगों का ६िाक्षण कर रहे है। साथ ही प्रदू८ाण नियंत्रण बोर्ड अब बनवासी सेवा आश्रम को भी जिम्मेदारी देने में रुचि रखता है। यह स्वैच्छिक संस्थाओं की बड़ी जीत है।
जब भारत सरकार ऐसे कामों की जिम्मेदारी संस्थाओं को सौंप रही है, जिस काम हेतु संस्थाओं को आन्दोलन करना पड़ता है। ५ाायद सरकार वह समझने लगी है कि ये काम सरकार, समाज और संस्थायें मिलकर बेहतर कर सकती हैं।

बांडी-लूणी नदी

सीधी कार्रवाई : सीधा आदे६ा

आजादी के बाद दे६ा भर में नदियों के किनारे जहां सब्जियां और फसलें पैदा होती थी, अब वहां या तो तेजाबी जहरीला पानी बह रहा है। राजस्थान की बांड़ी और लूणी नदी में खरबूजे, तरबूज गर्मी के दिनों में पैदा होते थे; आज वहां भी तेजाबी पानी ने जमीन बंजर बना दिया है।

दरअसल लूणी नदी किनारे पाली ६ाहर में औद्योगिक पानी को ५ाुद्ध करने के लिए तीन संयंत्र है। प्रत्येक पर 70 लाख रुपये मासिक बिजली खर्च होता है। यहां के संयत्रों के संचालकों का कहना है कि हम एक हजार लीटर पानी को ५ाुद्ध करने पर 11 रुपये खर्च करते है। बिजली ५ाोधन दोनों मिलाकर खर्च का आंकड़ा बड़ा है, लेकिन इस पानी का कोई उपयोग नहीं करते। राजस्थान में व८ाा कम होती है और पानी का भयानक संकट है। भू-जल के भण्डार खाली है। फिर भी इतने महंगे ५ाोधन से मिले पानी का सदुपयोग क्यों नही?
इस क्षेत्र में पानी दोहन आधारित उद्योग लगाना कानूनी तौर पर भी मना है, फिर भी यहां नये टैक्सटाइल उद्योग बड़ी तादाद में लग रहें हैं। पुराने उद्योगों में पानी ५ाुद्धि के नाम पर 10 करोड़ सालाना सरकारी पैसा खर्च होता है। यह पानी सल्फयूरिक और हाईड्रोक्लोरिक एसिड वाला होने के कारण नदी के खेती की उपजाऊ जमीन को बिगाडता है; भू-जल के भण्डारों को प्रदू८ाित करता है। यह पानी नदी किनारे के किसानों को उजाड़ता हुआ आगे बढ़ रहा है।
यहां पर उच्च न्यायालय ने पिछले सालों में इन उद्योगों को बन्द करने के सख्त आदे६ा दिए हैं:

1. पहला आदेश 21/7/2003 को दिया गया। इसमें बालोतरा की जो फैक्ट्रियां नदी में प्रदूषित पानी डाल रही है, उनके बिजली-पानी के कनेक्शन काटने को कहा गया। जिसकी आंशिक पालना ही हुई। इसमें से इस वक्त 300 कारखानें ऐसे है, जो किसी भी ट्रीटमेन्ट प्लान्ट से नहीं जुडे हैं एवं अपना कचरा सीधे लूणी नदी में डाल रहें है। ये कारखाने गांधीपुरा, छत्रियों का मोर्चा, चोंच मंदिर, खारोड़िया वेरा एवं सांकरना क्षेत्र में स्थित है। इनके अलावा जसोल में 10 कारखाने और बालोतरा खेड़ पर 50 कारखानों का प्रदूषित पानी भी लूणी नदी में आ रहा है। इस हेतु जिला प्रशासन को बार-बार निवेदन करने पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई।
2. दूसरा आदेश 9/3/2004 को हुआ। यूं यह आदेश पानी के कारखानों हेतु था । इस आदेश को बालोतरा के सभी कारखनों पर लागू होने की निर्देश दिए गए। इस आदेश में पृष्ठ 49 पर उच्च न्यायालय ने स्पष्ट रुप से छः निर्देश दिए। इसमें मुख्यता प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों को बंद कराने के आदेश किए गए थे, लेकिन उसकी पालना पूरे तरीके से आज भी नहीं हुई है। किसानों की जो जमीनें खराब हुई हैं, उसका मुआवजा देने के भी आदेश थे, लेकिन उस पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इस वक्त भी लूणी नदी में एक करोड़ लीटर प्रदूषित पानी मिल रहा है। यह पानी बिठूजा, बालोतरा, जसोल, तेमावास, मेवानगर, तिलवाड़ा होते हुए सिणधरी पहुंच गया है। आगे यह पानी सड़ा, पायला नगर, गुड़ा एवं गांधव तक पहुंचा है। औद्योगिक कचरा बालोतरा से 150 किलोमीटर तक लूणी नदी में उपजाऊ कृषि भूमि को प्रदूषित कर रहा है।
3. उच्च न्यायालय ने तीसरा आदेश 2/4/2004 को दिया था, जिसमें कहा गया था कि जो भी कारखाने ट्रीटमेंट प्लांट से नहीं जुड़े हैं, उन्हें तुरन्त बंद कराया जाए। लेकिन इस आदेश की भी करीब-करीब पालना ही नहीं हुई है।
4. उच्च न्यायालय ने 18/10/2004 को कारखाना मालिक एवं राज्य सरकार द्वारा पुनः विचार के प्रार्थना पत्र पर किसी तरह की कार्रवाई करने से मना कर दिया। इससे प्रतीत होता है कि उच्च न्यायालय ने गरीब किसानों की बात को सुना एवं उस पर आवश्यक आदेश दिए, लेकिन जिला प्रशासन ने इस पर कोई खास कार्रवाई नहीं की। उपरोक्त आदेशों के बावजूद समस्याएं और प्रदूषण नदी में बढ़ ही रहा है।

नदीं को शुद्ध-सदानीरा बनाने के लिए किसान, समाज व जलबिरादरी ने सरकारी अधिकारियों, राजनेताओं तथा उच्चन्यायालय से सब तरह की गुहार की। बावजूद इसके नदी और गंदी होती गई, तो 15 फरवरी 2008 को पूरी नदी के दोनो तरफ के किसानों ने सात हजार संख्या में पाली कलक्ट्रेट के सामने लोकादेश दिया। ये अपने फावडे साथ लेकर गंदे पानी के नालों को रोकने के लिए औद्योगिक क्षेत्र में गये। हजारों की संख्या में फावडों के साथ आये किसानों ने नालों को रोकना शुरू किया। सीधी कार्रवाई ने सीधा प्रभाव दिखाया है। आगे की योजना बनाई

है कि जब तक उद्योग अपने पानी को ५ुद्ध नहीं करेंगे, तब तक नदी में उद्योगों का पानी नहीं आने देगें। इस योजना पर सभी किसानों ने मिलकर कार्य ५ुरू कर दिया है। साथ-साथ राज्य सरकार को एक लोकादेद्दा भी सौंपा है। जिसमें स्प८ट कहा है कि बांड़ी-लूणी नदी व किनारे के बगीचे खेती को नद्दट करने का काम रासायनिक रंगों ने किया। रासायनिक रंग के उद्योग पाली में अवैध रूप से चल रहें है। इन्हे चलाने में अधिकारी, व्यापारी और पूंजीपतियों का त्रिगुट साथ है। इन्होंने बांड़ी-लूणी नदी की हत्या कर दी है। सरकार उन्हें दण्डित करे, और इस नदी को ५ुद्ध-सदानीरा बनाने का कार्य तत्काल प्रभाव से ५ुरू करे। कहा कि सरकार सुनिद्दिचत करें कि जहां भू-जल के भण्डार प्रदूद्दित हो रहे है, उन्हें ५ुद्ध किया जाये। खेती की जमीन जो बंजर हो गई है, उसे खेती योग्य बनाया जाये तथा इसकी क्षतिपूर्ति किसानों को मुआवजा देकर की जाये। इनके अतिरिक्त नदी लोकादेद्दा के अन्य बिन्दु भी ज्ञापन में ७ामिल किए गए।

गंगा-दामोदर

पटना के वरि८ठ पत्रकार दिनेद्दा कुमार ने बिहार की बाढ-सुखाड़ मुक्ति हेतु नदियों को संरक्षित व समृद्ध करने की मांग के साथ समाज में अलख जगाई है। ये गोमुख से फरक्का (गंगासागर) तक जगह-जगह गंगा यात्रा में ५ामिल हुए। इन्होंने बैद्यनाथ, देवधर के पण्डों-पुजारियों को भी गंगा संरक्षण कार्य में जोड़ा है। 12 जुलाई को देवधर ज्योतिर्लिंग में गंगा सम्मेलन आयोजित किया गया था।

झारखण्ड में घनद्दयाम भाई ने 30 जून को कान्हा सिद्धू की याद में हूल दिवस मनाते हुए नदी बचाने का अह्वान किया। इन्होंने दामोदर घाटी में नदी संगठन बनाने की ५ुरूआत की है। झारखण्ड राज्य की सभी नदियों में नदी घाटी संगठन बनाना तय किया है। आपके संगठन उलगुलान महिला मंच और उलगुलान मंच ने इस दिद्दाा में प्रभावकारी प्रयास ५ुरू किया है।

समाज-सरकार-संत-नदी-समागम

कैसे बने संयोग ?

परंपरा से भारत में सरल -सहज रुप में सभी कामों की प्रबन्धन कार्य प्रणाली रही है। इसी प्रकार भारतीय समाज ने नदी प्रबन्धन के लिए भी संस्कारों को माध्यम बनाकर एक द्दााद्दवत्

संरक्षण व्यवस्था खड़ी की थी । इसके तहत् भारत में जहां भी नदी स्त्रोत हैं, वहीं एक तीर्थ बना मिलता हैं। कोई भी... कहीं भी जाकर देख सकता है। दरअसल यह नदी संरक्षण की भारतीय व्यवस्था का एक अद्‌भुत तरीका है। आस्था के ये तीर्थ केवल मूल स्त्रोत पर ही हों, ऐसा नहीं है। नदी किनारे जहां भी समाज बसा, वहीं समाज ने नदी के साथ व्यवहार-संस्कार-सुधार हेतु अपने ऊपर एक रखवाला चुना।

जाहिर है कि नदी का रखवाला तो ऐसा प्रकृति प्रेमी ही हो सकता है, जिसका जीवन प्रकृतिमय होवे। सच्चे ऋटि और सन्त का जीवन प्रकृतिमय ही होता है। जो भी प्रकृति से लेन-देन की बराबरी को व्यवहार में लाता है... वह किसी भी धर्म का हो, वह ऋटि है। इनका मूल काम प्रकृति से ५ाोध करके मानव जीवन को सुखी, सम५द्ध, ५ाान्तिमय बनाना था। नदी के साथ मानवीय संस्कार व्यवहार कैसा होवे? ....ऋटि ही तय करते थे। इन्होंने ही नदी ६ाुद्धता का एक अद्‌भुत तरीका व्यवहार में उतारा था। जब समाज... सन्त को देखना बन्द कर दे या सन्त.... समाज व संस्कार की चिन्ता छोड़ दे; तभी नदी अ६ाुद्ध होनी ५ाुरू होती है।

गंगा भारत की पवित्रतम नदी मानी जाती है। मैं अभी कुछ दिन पूर्व उत्तराखण्ड में गंगोत्री-यमुनोत्री अदि स्थानों पर घूम रहा था। देखा कि जीवन भर यमुना-गंगा की पवित्रता की सुरक्षा हेतु संस्कार कराने वाले सन्त भी आज अपने ५ाौचालय का पाइप नदी में खोलकर बेखबर है।

संभावना के स्वर

नीर-नदी-नारी पंचायत

नारी लड़ेगी, नदी बचेगी

मेरे घर में मां, बहन और अब मेरी पत्नी ही मुझे जल देती है। जब कभी काम का बंटवारा हुआ होगा, तो नरियों ने ही नीर की व्यवस्था करना अपनी जिम्मेदारी मानी होगी ; तभी तो आज तक ये ही ''सभी को पानी'' पिलाती आ रही है पूर्व में पानी के निर्णय भी ये ही करती थी, लेकिन जब पानी की इन्जीनियरिंग आगे आई, तो निर्णय प्रक्रिया में नारी पीछे चली गई; यूं तो काम अब भी ये ही करती है।

नारी केवल नीर की समझ रखती हो, इतना ही नहीं है; ये इसे सहेजती और अनुद्गाासित होकर उपयोग भी करती रही हैं। जब से पानी पाइप लाइन में कैद होकर ५ाौचालय और स्नानघर में पहुंचा, तब से पानी के उपयोग सम्बन्धी नारी का अनुद्गाासन टूट गया। मुझे याद है कि मेरी मां मुझे परात में बैठाकर नहलाती थी। जो पानी नहाते वक्त इक्ट्ठा हुआ, उसमें पहले मेरे कपड़े भिगोकर खंगालने मे उपयोग करती थी; फिर पानी उसी परात में डाल देती थी। उस पानी से घर के बाहर चौक के लिए पीली मिट्टी को भिगोने में और कभी किसी दूसरे घरेलु काम में ले लेती थी, लेकिन अब घर से बाहर पानी सहेजने के निर्णय पुरु८ा ही करते है। घर से बाहर के साझे व बड़े कार्यो में ये आगे नहीं आती। ये जानती है कि बड़े काम बिगाड़ करते है। इसलिए ये घर के भीतर पानी व सहेजने के छोटे-छोटे कार्यो में लगी रहती हैं। नदी जैसी बड़ी जीवनधारा में जीवन को देखने की दृ८िट आज भी नारी में ही है। वह नदी को जीवन मानकर उसे पवित्र-प्राणों जैसा प्यार करती है। किंतु अपनी बेसमझी से या दूसरों की ५ारारत से नदी गंदी होती या मरती हो, तो भी ये बोलती नहीं हैं। यह ठीक नहीं है। अब इन्हें नदी-नारी के रिद्गते जीवित रखने हेतु बोलना भी चाहिए।

नीर-नदी-नारी पंचायत इनका बोलने का मंच मात्र नहीं है, यह पंचायत अब नदियों को बचाने, इन्हें ५ाुद्ध-सदानीरा बनाने, नदियों की पवित्रता और धरती की हरियाली' हेतु देद्गाभर में काम करने वाला संगठन बनेगा। देद्गा की बहादुर बहने इस संगठन के द्वारा नदियों का संकट मिटाने आगे आएगी।

नारी का नीर हक लेने हेतु ये भारत सरकार से संवाद ५ाुरू करेगी। भूजल ७ोद्गाण रोकने हेतु भारत भूजल नियंत्रण अधिनियम के तहत् ''भूजल नियंत्रण नारी पंचायत'' बने ; ऐसे सद्गाक्त कदम ही भूजल ५ाो८ाण को सतत् निगरानी करके भूजल पर सबको समान हक देने वाला सिद्धांत स्थापित करेंगे।

यदि नारी एक बार सोच सकी, तो ५ाहर, तीर्थ, घाटें यानि स्त्रोत से संगम तक सब जगह प्रदू८ाण-८ाोद्गाण के खिलाफ बुलंद आवाज खड़ी हो सकेगी। अब हमारी बहने ही नदी की हत्या को रोकने का नेतृत्व करेंगी। जहां बहनों ने ऐसे गलत कार्य रोकने की पहल की है; वहां अच्छी सफलता मिली है।

नदी पर संकट है; नारी आगे आयेगी। वही नदी को बचायेगी। यदि यह बात एक बार बढ़ी, तो फिर नदी बचाने का काम अपने आप ही दौड़ने लगेगा। नारी देवी है... दुर्गा है। बहने ५ाुरू करें ...भाई स्वत: साथ आयेगें। हमारी कोई भी बहन किसी नदी के नीर को प्रदू८ाण-द्गाोद्गाण-अतिक्रमण मुक्त बनाने की पहल करेगी; मै वादा करता हूं, कि वे अकेली नहीं दिखेगी। हम जैसे कई भाई भारत के हर कोने से उनके साथ होंगे।

नदियां सब की साझी है; बहनों का इन पर ज्यादा हक है। पूजा से लेकर घर-आंगन के कार्य नीर से ही पूरे होते है। नीर की बूंद किसी भी रूप में हम पाएं। वह नदी की संगिनी ही होती है।

प्राकृतिक सिद्धांत ने ही जल के विविध नामकरण किए। बादल से निकली जल की बूंद 'इन्द्र जल', धरती पर आकर 'वरूण जल' और धरती के पेट में जाकर वह गंगा जल कहलाती है। हिम पिघलकर जब नदी में आता है, तब भी वह गंगाजल ही कहलाता है। अधिकतर हिमस्त्रोत ऐसे ही होते है। कुछ भूजल स्त्रोत पेयजल योग्य नहीं होते; फिर भी भारतीय समाज ने धरती के पेट और हिमशिखर दोनों को पवित्र मान लिया है। जहां मानव दखल जितना कम है, प्राकृतिक पवित्रता वहां उतनी ही ज्यादा है।

नारी अधिक पवित्र होती है, इसलिए नदी को ''पापनाशिनी और मां कहकर नीर-नदी-नारी रिश्ते को गहरा और पवित्र बनाया गया। नदी-नारी के पवित्र रिश्तों को और मजबूती देने के लिए नदियों की पवित्रता का आन्दोलन नारियों को ही चलाना होगा। सभी धर्मो की नारी पवित्रता हेतु लड़ती है। नदी की पवित्रता हेतु लड़ने वाली लड़ाई भी नदियों की जीत की लड़ाई बनेगी।

नारी स्वयं सब कष्ट झेलकर बड़ी साधना के बाद दूसरों को जन्म देती है। अब नदियों के पुनर्जीवन की साधना भी बहनें शुरू करें और पुरुषों को भी इसी काम में लगाये। यूं गंदा करने वालों को दण्ड़ित करना तथा पुनर्जीवित नदी को शुद्ध-सदानीरा बनाने का काम करने वालों को प्रोत्साहित करना सरकारों की जिम्मेदारी होती है। सरकारें तो उलट कर रही है। वह अब स्वयं नदियों की हत्या करने वालों को ही प्रोत्साहित करने में जुटी है।

जब सरकार उल्टा करने लगती है। तब नारी ही सब को सीधा करती है। नदी शुद्धता हेतु लड़ना सबको सीधा बनाना ही है। राज-समाज और संत सब उल्टा चलने लगे है। नारी समाज को बनाने वाली है। वह संस्कार से लेकर तकरार तक की अगुवाई करेगी, तो सभी को साथ आना ही होगा।

'नीर-नारी-नदी पंचायत' भारतीय ज्ञानतंत्र का सम्मान है। आज की प्रगतिशीलता इसी में है। जरूरी है कि अब भारत अपनी मूल अच्छी आदतों को पुनः व्यवहार और संस्कार बनाये। भारत ही नहीं, दुनिया भर में आज प्रकृति को पुनर्जीवित करने में नारी को आगे आने की जरूरत है। पूरे समाज को चाहिए कि वह नारी और प्रकृति के सहअसत्तिव का सम्मान करते हुए नदी के प्रदूषण-अतिक्रमण-शोषण का प्रतिकार करें।

बिगुल नारियों को बचाना होगा। क्योंकि अनुभव बताते है कि नारी अपने निश्चय के प्रति अधिक गंभीर होती हैं नदी-नीर बचाना किसी एक की जिम्मेदारी नहीं, इसमें सभी की पहल जरूरी होती है। .तो क्यूं न नारी पहल करें ! 'नीर-नदी-नारी पंचायत' इसका प्रतीक बनेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

नदी संरक्षण सत्याग्रह सम्मेलन 2008

28.29.30 जुलाई 2008 ''नीर-नदी-नारी''

प्रथम सत्र

अध्यक्ष श्रीमती मधु भादुडी (विदे६ा विभाग, अवका६ा प्राप्त भारत सरकार)

मुख्य वक्ता श्रीमति ५ाांता ५ीला नायर (सचिव, पेयजल आपूर्ति विभाग, भारत सराकर)

वक्ता - प्रो. श्री गुरूदास अग्रवाल (पर्यावरण वि६ो८ाज्ञ)

वक्ता - श्रीमति सविता सिंह (निदे६ाक, गांधी स्मृति, समिति, नई दिल्ली)

वक्ता - पदमश्री श्रीमति संतो८ा यादव (प्रथम महिला पर्वतारोही)

५ाांता ५ीला नायर ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह तो अच्छी बात है आप सभी सोचते है नारी-नीर और नदी में संबंध है। आजकल ग्रामीण, ५ाहरी विभाग और पानी के भी अलग-अलग विभाग हो गये है। इसमें अच्छा भी है, बुरा भी है। अच्छा है यह कि जैसे पेयजल विभाग है वो अच्छे से अपना काम कर सकता है। लेकिन बुरा यह है हम एक दूसरे के ऊपर जिम्मेदारी डालकर टाल देते है। लेकिन सभी विभाग मानते है कि व८ाा जल, भूजल या कोई भी पानी हो उस पर पहला हक पीने के पानी का है।
पहले पंचायत से लेकर सरकारी अफसर सभी लोग सोचते थे कि पानी पीने लायक नहीं तो साफ कैसे करें ? लेकिन अब हम सोचते है कि पानी साफ करने के बजाय पानी गंदा न करने के लिए क्या करें ? इसके लिए हर ग्राम पंचायतों में पांच लोगों की सरकार की वाटर एंड सेनीटे६ान की समिति है। उसमें उन पांच लोगों में से एक कम से कम तीन महिलाएं आ६ाा या एस.एच.जी.हो। इस तरह मध्यप्रदे६ा में एक कानून निकाला है कि नदी पेयजल व सेनिटे६ान कमेटी में 100 प्रति६ात महिला हों। ये राज्य सरकार ने यह कानून नारी को जल के साथ जोड़ने के लिए बनाया गया है।

पहले पेयजल विभाग यह मुद्दा नहीं उठाते थे क्योंकि उनका लगता था कि पीने के पानी के संबंध में नहीं है। राजेन्द्र सिंह जी के साथ तीन चार बार मिटींग करके हमने यह राज्य सरकारों के साथ संवाद ५ाुरू किया है। यह पानी क्यों प्रदू८ाित हो रहा है ? इसको कैसे रोका जाये ? भूजल, नदी व पानी के अन्य स्त्रोतों के संरक्षण के लिए क्या कर रहें है ? पेयजल के संरक्षण के लिए तो हम मदद कर सकते है।

पानी में जो जहर है, उससे लोगों में बीमारी व मौत हो रहीं है। वाटर सिक्योरिटी हर घर की जरूरत है, महिलाओं की वाटर सिक्योरिटी हो। पंचायत में महिलाओं के साथ बातचीत करना ५ाुरू कि क्योंकि घर में उनकी यह जिम्मेदारी बनती है, पहले उन्हीं से ५ाुरूआत होती है। उसके साथ सफाई का ध्यान बहुत रखना जरूरी है। घर में अ५ाुद्ध, प्रदू८ाित पानी से बीमारी फैल सकती है। हर व्यक्ति के लिए पानी की आव५यकता 40 लीटर की हैं लेकिन कुछ घरों में पानी नही है, और कई घरों में पानी ज्यादा है।

५ाौचालय बनने से पानी के स्त्रोतों का डिग्रडि५ान थ्रू हयूमनबेस कम हो। पानी के स्त्रोतो के पास ५ाौच नहीं करना चाहिए। इसके लिए निर्मल ग्राम पुरूस्कार ५ाुरू किया है। ऐसे ही गांव के पीने के पानी के स्त्रोत को गंदा नहीं करने के लिए गांव को प्रोत्साहित करने के लिए हर गांव में, घर-घर में पानी की सिक्योरिटी लाने के लिए सोच रहें है। हम पानी के सभी स्त्रोत के साथ नदी के बारे में सोच रहें है, नदी भी महत्वपूर्ण है। गावों को अपने पानी को स्त्रोतों को साफ रखने, बचाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु 'सजल गांव' पुरूस्कार यह एक छोटा सा प्रयास ५ाुरू करने का सोच रहें है।

लेकिन 25 साल के बाद ग्रीन रव्यूले५ान अब पानी खत्म कर दिया। एक तरफ हमारा भूजल खत्म होने लगा भूजल में और दूसरा यह पानी सब प्रदू८ाण की समस्या से ग्रस्त लोग जल आर्सेनिक, फलोराईड, नाईट्रेट, आयरन जैसे इनकी मात्रा ज्यादा होने से भी बीमारी हो रही है।

राजस्थान में एक आपकी योजना के अंतर्गत दूर-दूर से नदियों से पानी लाया । उसमें महिलाओं की कमेटी बनाकर महिलाओं को और गांव में बांटा तो उन्होंने देखा पानी का उपयोग कम होने लगा पहले ज्यादा पानी उपयोग करते थे, लेकिन पानी अच्छा जब चाहिए मिलने लगा, पानी का दोहन, गलत इस्तमाल कम होने लगा।

हर एक में कमियां है फिर भी हम सरकार में है हम आपसे जुड़कर काम करना चाहते है। हर साल की तरह होने वाले वाटर एण्ड वीलेज एण्ड सेनीटे५ान पर मेनेजमेन्ट कोन्फ्रेन्स होगी इसमें प्रधान मंत्री को बुलाएंगे। इसमें नारी के उपर चर्चा करेंगे। इस पर नीर-नदी-नारी को जोड़कर चर्चा करेंगे।

सुझाव

केवल भूजल पर हम ज्यादा निर्भर रह नहीं सकते। हमें वापिस नदी के पास ही जाना होगा इससे नदी के पुनर्जीवित होने से ही पेयजल की समस्या का समाधान कर सकते है।

नदी हो चाहे कुछ भी हो आप पूरे हक के साथ कह सकते हैं कि पानी पीने लायक होना चाहिए यह मुद्दा उठाना जरूरी है। आगे जाकर यह कह सकते है कि नदी प्रदू८ाण में नदी के पानी पर, भूजल पर हमारा पहला अधिकार है।

हम चाहते है कि सरकार की तरफ से एक पूरे भारत में कानून बनाया जाय कि जो भी पीने का पानी गंदा करें उसको क्रिमीनल ऑफेन्स के लिए अपराधिक दण्ड दिया जाय। ऐसा कानून बनाने के लिए आप सब भी सरकार पर दबाव बनाये।

सविता सिंह - नीर-नारी-नदी-पंचायत बहुत महत्वपूर्ण प्रयास है। गांधी जी ने सत्याग्रह के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सत्याग्रह का मूल रूप मेरी मां संध्या पूजा के समय ५ाामल भट की कविता के सार यदि कोई व्यक्ति प्यासा है तो उसको दौड़कर पानी देते हो और यदि कोई व्यक्ति ने तुम्हें प्यास लगने पर पानी मांगे उसने पानी नहीं दिया हो और उसने पानी मांगा तो भी बिना किसी भेदभाव से दौड़कर पानी पीला दो। यह मूल मंत्र है। यह मूलमंत्र मां से लिया है। सरयू नदी के किनारे मेरा गांव है, सोना नदी के किनारे, बगीचों में बैठकर परम्पराओं के बीच गांधी की कथा सुनी। पूर्वी उत्तरप्रदे६ा में छट पूजा होती है, नदी से होती है। कुए की पूजा होती थी, कुआं की ५ाादी होती थी।
गांव का ५ाहरीकरण हुआ, ५ाहरी कानून आये, उसके बाद गिरावट आयी। सबको अपने अधिकार के साथ कर्तव्य का पता था। 40-45 साल पहले गांव में, घर में कहा कुआं होना चाहिए ? देखभाल होनी चाहिए ? इसके बारे में खुद सोचते थे। हवा के बाद प्राणी, प६ाुओं पानी की जरूरत है। सबको पता था जल किस तरह संचित किया जाता है ? किस तरह से संरक्षण हो कैसी खेती हो देखभाल हो अब 2-3 साल से देख रहे है कि किसी खेती के बारे में या पानी के बारे में पूछा तो वो बोलते है कि एन.जी.ओ. साहब बतायेंगे। इस मौसम में क्या लगाना है। क्या करना है ? 5000 साल पहले पानी देखकर किसान बतता था कि बादल आने वाले है पानी को कैसे संरक्षित करना है ? कहा करना है ?

आज जमीन का पानी का दोहन हो रहा बोतल के पानी के वजह से नदियों की बात है। गांव का झरनों का बात करते है। स्वच्छता की परम्परा गांव में दिखाई देती है। गांव के झरने का पानी भी मिनरल वाटर के बराबर है।

नदिया भी साफ है कही रहा होगा साफ पानी। मैं एक नारी हूं मेरा संबंध नीर से भी, नदियों से भी है। चम्पारण जैसे ५ाहरों में इतनी हिंसा हो रही है। अदमी लोग जो है, बन्दूक लेकर कुओं के उपर खड़े होकर अपने-अपने कुओं और जलस्त्रोतों को बचाने में लगा हुआ है, मसल पावर के उपर। वहां महिला कहों जायेगी ? पनघट का हमारा बहुत अच्छा संस्कार हुआ करना था, महिलाएं मिलती थी विचारों का आदान-प्रदान हुआ करता था। हजारों साल यह परम्परा चली। लेकिन आज पनघट पर महिला नहीं पहुंच सकती। पनघट पर आज बंदूकधारी खडे रहते। जो बचा कुचा पानी उसको संरक्षित करते है। बचाने के लिए। पहले कुआ, पानी, तालाब पूरा गांव हुआ करता था। हर को कुए के प्रति जिम्मेदारी का भाव होता था। एक अलग तालाब था जिसमें गांव के लोग नहाने के लिए जाया करते थे। तालाब अपने आप बनता था। घर अपने आप बनते थे। हर गांव में तालाब हुआ करता था। पटना में जाने से तालाब उपर से दिखाई देता था। लेकिन अब हम जानते है पटना में तालाब नहीं दिखाई देता है न नदी दिखाई देती है। गंगा में जब बाढ़ आती है तो महिलाओं को सबसे ज्यादा परे६ाान करती है। बाढ़ से उनका घर उनका खराब होता है, घर की जिम्मेदारी आज भी उन्हीं के हाथ में है।

सुझाव-

महिलाओं की आज हम बात कर रहें है। महिलाओं को एक मजदूर बनाया जा रहा है। अगर महिला स६ाक्त होगी तो अपने गांव के जल स्त्रोत पानी भी, गांव भी स्वच्छ हो जायेंगे। अगर महिलाओं को स्वच्छ रहती है तो परिवार भी साफ रहेगा। महिला स६ाक्त हो परिवार स६ाक्त हो जाता है। गांव सुधर जाता है।

प्रो. जी.डी. अग्रवाल - नदी और नीर का संबंध हो जाता है यदि नदी में नीर न हो तो नदी नहीं लेकिन केवल नीर भर से नदी नहीं हो सकती। नदी केवल बहता हुआ नीर आव६यक है। नदी के लिए आव६यक नीर हुआ और प्रवाह है। उतनी ही आव६यक है। पहले जीवन ५ौली जीवन मूल्यों से नियंत्रित करती है। हमारी संस्कृति के जीवन मूल्य ५ाा६वस्त जीवन मूल्य है। ये तीन मूल्य असंग्रह, अस्वाद और ५ारीर श्रम नि८ठा हमारें जीवन में कहीं दिखायें नहीं देते।

आज जीवन ५ौली आव६यकताओं पर, टेक्नोलोजी पर निर्भर करती जीवन ५ौली बाजार पर निर्भर करती है जीवन मूल्यों पर नही। जीवन मूल्यों में असंग्रह बात व अस्वाद की बात थी। सिर्फ

खाना खाने में अस्वाद की बात नहीं की लक्झरी इच्छा अच्छे जीवन स्तर की इच्छा, वो भी स्वाद में आता है। और असंग्रह में जो बड़े-बड़े बाथरूम की अपेक्षा करें ?

पहले पीने का पानी के बिना गांव नहीं होंगे। पीने के पानी के बिना कोई जीवन कैसे रह सकता है। आज हम सोचते है पानी हमारे पास आये। लेकिन प्यासे के पास कुआं नहीं जाता कुएं के पास प्यासा जाता है। पीने का पानी की समस्या यह तो केवल ५ारीर का श्रम का है। पानी कितना दूर से लाये।

जीवन का मूल्य क्या हुआ हमारें पानी घर में पहुंचे। चाहे नदियों को न८ट करके पहुंचे। यह हमारी जीवन ५ौली है। ५ारीर श्रम से बचने का प्रयास कर रहें हैं।

मैं अपनी जीवन ५ौली को कहां भी हल्का करने के लिए तैयार नहीं हूं। दूसरों को और भी ज्यादा मिले तो ये कहां से मिलेगा ? ज्यादा मिले वो कहां से मिलेगा अंत: पर्यावरण, प्रकृति और उस नदी से निकले उस नदी का हम मां कहते है उसी नदी को लूटने पर मिलेगा।

ऐसी स्थिति में प्रकृति की सुरक्षा कर पायेंगे ? नदियों की सुरक्षा कर पायेंगे ? नदी की सबसे बड़ी समस्या है। जल की बड़ी समस्या है, कि पीने का पानी से पैदा नहीं हुई उद्यौगों से पैदा नहीं हुई। हमारी कृ८ि की हरीतक्रांति से हुई है। हमारी कृ८ि सिंचाई होती है। हमारी कृ८ि की वजह से भारत को सोने की चिड़िया माना जाता था।

नदियों को रक्षा हो तो गंगा की रक्षा करना हो क्या हम गंगा नहर बंद कर सकते है ? अगर हम बात करते है पूरी गंगा को अविरल बहाने और निर्मल बनाएंगे तो क्या-क्या बंद करायेंगे ? और कहां-कहां बंद करायेंगे ?

सुझाव

यदि हमें नदियों को सुरक्षित रखना हो तो अपने व्यक्तिगत सुरक्षा के भाव को छोड़ना होगा। नदी को बचाना तो होगा अधिकार और कर्तव्य के बारे में सोचना होगा।

प्रयास करने चाहे तो उसके व्यावहारिकता को सोचने उस व्यवहारिकता को सत्याग्रह के उस लड़ाई से कैसे जोड़े? लड़ाई के अपनी मोटो को, रणनीति को अधिक अच्छी तरीके परिभा८ित

कर सके। सबसे बड़ा बल तपोबल होता है। एक बडा उद्देश्य लेकर हमें नदियों को बचाना गहन और तपस्या से बलिदान करना होगा।

संतोष यादव :- एक साल में दो बार सांगर माया माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की। मां पहली शिक्षक होती है। नदी के बारे में चिंता का विषय है कि हम लोग समाज के रीतिरिवाज को भूलते जा रहें है। लाईफ स्टाईल मां-बाप, नाना-नानी, नारी-नदी की बात हो रही है। यह बहुत गहरा संबंध है। पानी बचाने की पहली शिक्षा मुझे मेरी मां से मिली। हर चीज को इतने ईक्सट्रीम चले जाते है कि हम अपनी नदी मां को भूल जाते है। पानी की इस्तमाल करे इससे पानी कम नहीं होता इस बात के लिए हमें थोड़ा सा सोचना चाहिए। मुझे चिंता हो जाती है जब हरियाणा के रास्ते पर पेड़ नजर नहीं आता है। उसी तरह पानी की चिंता है। हमें हमारी नदियों व संस्कृति को बचाना होगा। हर चीज का समाधान मां है। नदी और नीर बचाने में 80 प्रतिशत जिम्मेदारी नारी की है। नदी हिमालय के साथ मां को भी सम्मान देना चाहिए। कोई भी चीज असम्भव नहीं है, समस्या जरूर है।

राजेन्द्र सिंह :- नदी को मां कहते है वो मां के साथ कैसा व्यवहार हो ? नदी के साथ कैसा व्यवहार हो ? आज हम नदी को हम अपनी मां को मैला ढ़ोने का ही काम देते रहेंगे ? नदियों को सरकार ने नकार दिया है। या तो नदियों का विकास या मैला दूर करने के नाम पर करोड़ करोड़ो पैसा खर्च करने के लिए। क्या नारी-नदी-नीर-पंचायत यह कह सकती है कि भारत की नदियों को सचमुच मां बना सकती है ? यदि नदी को हम मां कहते है, तो नदी को जीवन भी कहते है। नदी तो जीविका भी है। एक तरह से उन्होंने हमें पाला है, वो हमारी जमीर भी है और आस्था भी। हमारा गौरव भी। आस्था तक बहुत ऊपर चले जाते है तब हम आस्था के लिए बहुत बड़ी यात्रा करनी पड़ती है। जी.डी. जी आस्था है। वो आस्था की गहराई बहुत सालों के अनुभव के बाद आई। लेकिन मैं मानता हूं कि नदी मेरी जीवन है, मेरी जीविका है, मेरा जमीर है। यदि मैं नदी को जीवन कहता हूं तो मैं मानता हूं कि नदी यदि बचेगी तो पवित्र, ठीकठाक रहेगी, शुद्ध-सदानीरा बनेगी तो देश पानीदार बना रहेगा। इस देश के पास सब कुछ होगा और फिर इस देश की यदि इस देश की नदियां प्रदूषित हो जायेगी, गंदी हो जायेगी, तो इस देश के पास कुछ नहीं होगा। हम ने पिछले 40 सालों में भूजल का शोषण करके नदियों के स्त्रोत को सूखा दिया। और 30 सालों में नदियों को प्रदूषित करके नाला बना दिया। 20 सालों से हमने नदियों की जमीन को बदलकर मर्जी आए जो सरकार, मर्जी आए म्युन्सीपालटी, मर्जी आए पंचायत नदियों का चरित्र बदल दिया जमीन बदल दी उनका बदल उनका

स्वरूप बदल दिया। ये जो उनकी हालत है उससे विनाद्गा का दौर आ गया है। इस विनाद्गा के दौर में हमारी पंचायत रास्ता बता दें।

किद्गोरी के बारें में जानकारी देते हुए श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा ये जो नदी है ये वो अपने आप रगों में रंगती है जो इसमें ये नाहता है। चाहे वो नदी नाहने लायक बचे ना बचे कुछ भी हो गया हो उसका लेकिन अब तक जो उसने कुछ जाना है उस नदी की अब तक की उर्जा इतनी महान है, कि वो अपने रंग में रंग लेती है।

प्रो. राठौड - नैद्गानल वाटर पालिसी या स्टेट वाटर पालिसी देखे तो प्रीअम्बल के पहले दो पेज को छोड दे तो सब एक ही है। जब राजस्थान पोलिसा का पहला ड्राफ्ट बना था, उसमें पानी का डिस्पोजल, मैनेजमेन्ट यूज सब सरकार के पास होगा । कुछ लडाई लडने के बाद तीन-चार साल में कम्युनिटी का मेनैजमेन्ट, कम्युनिटी की ओनरद्गीप, कम्युनिटी हेरीडेटरी टर्न उन्होंने दे दिया। तो यह महत्वपूर्ण है कि बाकी स्टेट में भी ऐसा हो रहा है क्या? खास तौर से जहां मेजर नदियाँ जा रही हैं। उनमें क्या हो रहा है? ये मेनैजमेन्ट क्या ओनरद्गीप उनको ट्रान्सफर करेंगी? कम्युनिटी के उसपर करने को तैयार है? इसकी क्या इम्पलीकेद्गान है? <u>हमारा समाज सक्षम है, पानी के संसाधनों को ठीक से मेनेज कर सकता है। क्या मोटो है? मैं इसलिए बता रहा हुँ वाटर प्रायोरिटी की बात है उसका कोई रेद्गाो नही लिखा हुआ। हर बार लिखने के लिए लिखते है कि ड्रिकींग वाटर फर्स्ट प्रायोरिटी, हायड्रोपावर, इन्डस्ट्रीज सेकंड प्रायोरीटी । जब नई इंडस्ट्री लगती है तो उनको परमिद्गान देते है तब प्रायोरिटी उसी इंडस्ट्री की हो जाती है। ये सब है मजाक बन गया है। उसका कोई प्रेक्टीकल इम्पलीकेद्गान नही है। अगर 90 प्रतिद्गात ड्रिकिंग वाटर प्राइवेटली ओन हो तो स्टेट की प्रायोरिटी उसमें कहां है? नहीं है। प्राईवेट परसन डिसाईड करेगा तो क्या होगा? उसमें स्टेट क्या करेगा? उसका कुछ मिनिंग है ही नही। केन अक्वायर वाटर स्टकचर, वाटर बाडीज टू सप्लाय ड्रिकिंग वाटर एण्ड कार्पोरेट । लेकिन लो और कस्टमरी लो डझनाट अलाउ देट । बताते है कि उसमें क्या करना पडता है कि कम्पनसेद्गान देना पडता है, कलेक्टर को भी अक्वायर करता है। ये सब कब चंन्ज होगा? जबकि प्रायोरिटी का मतलब क्या है? उसका इकोनोमिक रेद्गाो, पोलिटिकल डिसाईड करते हो या कैसे ? इन्डस्ट्री लग रही बेतहद्गाा तो सारी प्रायोरिटी उसी को मिली तो आप क्या करोगे?</u>

पहले हमने जो मुहीम चलाई थी, जलबिरादरी ने अलटरनेटीव वाटर पोलीसी की। उस समय हमारी समझ दूसरी थी। हमारे विचार में भी उथलपुथल आ गइ्र है। अब सोचने की जरूरत है कि यह पोलिसी डिस्ट्रीक्ट वाइज बने, स्टेट वाईज बने, क्या बने? जो आरगनायेद्दानल स्ट्रक्चर मेनेजमेन्ट स्ट्रक्चर जिसकी आप जो बात करते है इनवायरोंमेटल फ्लो के बारे में इंजिनीअर्स को पता ही नही है उसका मिनिंग क्या है? हमारे यहा यह भी आया कि वाइल्ड लाइफ को पानी का अलोकेद्दान हो या नही? पासा में जो वाइल्ड लाइफ है उनको पानी छोडे या न छोडे? वो कहते है कि पहले पानी इरीगेद्दान के लिए एग्रीकल्चर के लिए देंगे, बाद में उसके बारे में सोचेंगे। उसके लिए कही जगह है ही नही। अभी उन्होंने पूछा लाइव स्टोक तो मैने पूछा वाइल्ड लाइफ के लिए क्या करोगे? तो उन्होंने कहा कि वो तो लाइव स्टोक में ही आ जाता है। उनको ये डिफरेन्स पता नही है कि लाइव स्टोक क्या है? और वाइल्ड लाइफ क्या है? मिनिस्टरी में जो टेक्नीकल लोग बैठते है वो हमारा अभी तक का सिनेरिआ द नही पायें है। उनके पास समझ नही है कि वोलिस्टिक वाटर पोलिसी कैसे बने?

सुझाव

सब लोग बैठकर बात करे कि गर्वनेन्स पर वाटर पोलिसी में कोई बात नही की है। आज कल जो नये नये वाटर युजर ला वनाकर ला रही है, वो किस तरह से कोन्ट्राडिक्टरी है? इस पर सोचा जाए। दुबारा से उसको रिव्यूव करने की जरूरत है।

वल्ड वाटर फोरम या वल्ड बैंक दोनों ने मिलकर जो इन्टीग्रेटेड वाटर मेनैजमेन्ट बनाना चाहा है, उसकी जो साद्दाल पोलिटिकल रिव्यूव और सिविल कान्स्टीट्यूद्दानल प्रोवीजन जो पंचायत को दी है वो बहुत कान्ट्राडिक्टरी हैं। क्या वो लागू हो सकती है या नही आप देख सकते हैं। इसको रिव्यूव करे कहां तक सही है?

स्टेट वाटर पोलिसी में एक क्लोज है यह एड है कि जो अंग्रेजों के जमाने में बने कानून उनको रिव्यूव नही किया। उन्होंने कहा था कि हम रिव्यूव करेंगे ।

अब वाटर पोलिसीज पर सोचने की जरूरत है ।
मधु भादुड़ी अध्यक्षा :- ५ीला जी ने कहा कि पहला हक पानी का पीने के लिए है। अगर हम ये करेंगे तो हमारा जल, हमारी भूमि, हमारी वायु व बाजार में होगी चाहे नारी हो नर कोई पंचायत हो नियम ये सब नाम के है, वक्त में बदल जायेंगे। मूल चीज है पैसा, कौन

कितना, कहां से पैसा बना सकता है ? हम प्रदूटाण की बात कहते है दिल्ली सरकार ने जलबोर्ड में 1400 करोड़ रू बनाया है गत वर्टाों मे सिर्फ यमुना को साफ रखने के लिए। वो यमुना आज एक गंदे नाले से भी बदत्तर है। हमे ५ार्म आनी चाहिए। हम लोग जो अपनी नदियों की बात करते है, संस्कृति की बात करते है ये सब हमारी भागीदारी से हो रहा है। मुझे एक बहुत अच्छी बात लगी जो ५ाीला जी ने कही कि अब आपराधिक दण्ड एक ऐसा कानून बनाया जायेगा। अपराध का कानून जहां जो प्रदूटाण करें उसे अपराधी घोटिात किया जायेगा। और उसको सजा दी जायेगी। तो सबसे पहले सजा मिलनी चाहिए डी.डी.ए. और जलबोर्ड को। क्योंकि सारी यमुना का प्रदूटाण सरकार ने किया है। हम लोग इसके खिलाफ कितनी ही बातें करें, कितनी ही आवाज उठायें ये मगर सबसे पहले मैं उनसे ये कहूंगी कि कानून जल्दी से जल्दी लाया जाए ताकी आप भी तैयार रहिए हम सब मिलकर डी.डी.ए. और दिल्ली जल बोर्ड को इस कानून के महज गिरफतार करेंगे।

नदी की पूजा होती है वहीं पूजा छट पूजा के बाद यमुना जल गंदा हो जाता है। हमारी प्रथा में नीतियां जो बनाई जाती है। और जो भी प्रसाद होता है। वो सब जल प्रवाह कर दिया जाता है। आप जाकर देखिए इन पूजाओं ने नदियों का क्या हाल बनाया है। ये हमारी प्रथा है। मगर इस प्रथा को हमें बदलना है ताकी ये प्रथा हमारी नदियों का अन्य ना देखे। आपने कहा कुएं गांव की सम्मति होती थी, उसकी पूजा की जाती थी। यह सही है अच्छी बात है मगर हमें ये नहीं भूलना यदि हम आज अपनी परम्परा, अपनी सभ्यता, अपने पुराने तौर तरीको के बारे में बोल रहें है। उसमें ये भी था कुओं का जल हर जाति के लिए उपलब्ध नहीं था। ये मत भूलना हमारी संस्कृति थी। हमारें कौन्स्टीफयूद्दान ने हमारा संविधान है। उनके खिलाफ कदम उठाएं हमें कुछ लग रहा है कि उसमें कमीयां भी है। कम से कम उस संविधान ने हर जाति हर कुओं का जल उनको उपलब्ध किया है। यह नहीं भूलना है हमारें संविधान ने ये किया है कि हमारी संस्कृति में जो त्रुटियां भी उसे सही करने का प्रयास किया है। जहां हम संस्कृति के परम्परा का बाते वहां त्रुटियां भी थी। ये भूलना नहीं चाहिए। वीएतनाम का उदाहरण देते हुए हमसे कहां कि जब में वीएतनाम में थी वहां गरीब देद्दा था। आजादी नहीं है। हमारे प्रमुख में गंदगी खूब है मैं ये सोचती थी कि वीएतनाम में हमसे कई गुणा ज्यादा गरीब है लेकिन गंदगी नहीं। गरीबी का और गंदगी का कोई वास्ता नहीं। यह हमारी जाति प्रणाली का वास्ता है। हमारे टायलेट, ५ाौचालय मैले गंदे क्यों होते है ? हम खुद साफ नहीं करते। क्योंकि दुनिया का हर देद्दा साफ अपने टायलेटस खुद करते है अपने टायलेटस साफ करने के लिए जाती बना ली। जो हम गंदा करें और वो साफ करें। यह हमारी संस्कृति जिससे हमें झुझना है। जिसको हमें समझना है। जिसको हमें सुधारना है। हम जिस दिद्गाा में जा रहें है। उसमें नारी का काम नहीं है। नहीं नर का काम बाजार का काम है। पैसे का काम है। वहां नदियां बिकेगी, बिक रहीं

है। नदियों की भूमि बिक रही है। हमें अगर लड़ना है, राजेन्द्र भाई तो एक समझ, दिशा को बदलने से ही कर सकते है।

मनोज मिश्र द्वारा अंग्रेजी नदी संरक्षण सत्याग्रह 2008 का लोकादेश पढ़ा।

श्री मनोज मिश्र ने नीर-नदी-नारी-पंचायत का संचालन करते हुए कहा कि जल को कहते है जीवन तो जिस चीज में जीवन है। उसके लिए जल की आवश्यकता है। हमारें यहा एक नार्वे से सज्जन आये थे तो उन्होंने कहा कि वेट टोयलेट नहीं बनायेंगे। जब हम वेट टोयलेट बनायेंगे तब हमे पानी चाहिए। और वेट टायलेट बनायेंगे तो हमारी 135 लाख की आबादी सबका शौच उसको वहन कौन कर रहा है। हमारी जीवनदायिनी नदी यमुना। मेरे कहना है कि वेट टायलेट को प्रमोट ने करें। प्रमोट करीये ड्राय टोयलेट, टैक्नोलोजी है।

ये पंचायत क्यों हो रही है। इस पंचायत की शुरूआत कैसे हुई ? इस पंचायत की शुरूआत हुई यमुना सत्याग्रह से। आपने हमें सत्याग्रह पर वापिस लाकर एक ऐसा मोड पर खड़ा किया। यमुना सत्याग्रह का परसो 365 दिन यमुना सत्याग्रह को पूरे हो जायेंगे। ये सत्याग्रह के 365 दिन उन्हीं के कारण टिक गया हमारें कई सारे गांव हैं जिनके भाई इस सत्याग्रह को चला रहें हैं। इस सत्याग्रह के माध्यम से कभी गीत गाया नहीं कभी वो किशोरी भाई गायक बन गये और एक बात और किशोरी भाई सत्याग्रह के अन्नदाता भी है। कोई भी सत्याग्रह कभी आयेंगे उनको किशोरी भाई मिलेंगे वहां। किशोरी भाई उन किसानों में से है। जब अक्षरधाम बना तब उनकी पूरी जमीन उनसे छीन ली गई। इसके बावजूद सत्याग्रह के पहले दिन से सत्याग्रह से जुडे। किसी आशा से नहीं कि इनकी जमीन वापस आयेगी। इनकी जमीन इनसे छीन चुकी है। सिर्फ इस आशा से इस सत्याग्रह से इस शायद इस सत्याग्रह से जीवनदायिनी यमुना नदी बच जायेगी।

डा. जी.डी. अग्रवाल जी की बाते सुनकर ऐसा लगता है शुद्धि के रूप में भी पकड़ा गया हो इस तरह की बाते काश पार्लमेन्ट में होगी, इस तरह की बाते काश हर शिक्षक हर क्लास में कर सकता। इस तरह की बाते काश धर्मगुरू अपने अनुयायियों के साथ कर सकता। इस तरह की बाते हर मीडिया का जो आज कल मीडिया मुग्ध बन गये इसके माध्यम से शायद सब जगह होगी। क्योंकि में हमारी अपनी मूल भूत संस्कृति में जो हित, जो हमारें दैनिक क्रिया क्लाप की बातें रखते हैं। मैं हिन्दू हूं, वो नहीं है। मैं मुस्लिम हूं, वो नहीं है, मैं ईसाई हूं वो नहीं है। धर्म का मतलब है सारे दिन में मैं जागा हुआ हूं। तो मेरा कोन्डैक्ट क्या है ? धर्म-धर्म का मतलब होता है, कोन्डैक्ट तो ये बात जगह पर पहुंच पायेंगे तो कोई फर्क नहीं पड़ता।

सत्र-2 संत-समाज-सरकार-समागम

वक्ता घनश्याम भाई, झारखण्ड
वक्ता मा. बलजीत सिंह, यमुना सत्याग्रह
अध्यक्ष स्वामी शिवानन्द सरस्वती, हरिद्वार
प्रमुख वक्ता अरूण भाई 'पानी वाले बाबा' अलवर
वक्ता रूपचन्द्र नागर, गजरौला उ.प्र. ''मांगद नदी''

स्वामी शिवानन्द सरस्वती- हमारी परम्परा ऋषियों की परम्परा है। हमारी परम्परा त्याग की परम्परा है। हमें मीडिया साथ नहीं देता, वहां के लोग साथ नहीं देते। वहां के साधू संत साथ नहीं देते हैं। खनन की लड़ाई में गंगा आयेगी कैसे ? गंगा तो एक है। गंगा मन के द्वारा आयी है। । हमारा काम है सत्य को दुनिया के सामने रखना । रचना को हम केवल जल के रूप में ही देखते हैं उसका भी उपयोग है और आज ज्यादातर आन्दोलन उसी रूप देखते हैं गंगा का जल पवित्र है निर्मल है हमें उसको बचाना होगा। आज गंगा को किसी और रूप में देखना देखना पड़ेगा। गंगा का केवल भौतिक रूप नहीं देखना उसमें आध्यत्मिक शक्तियां भी है।
हमारा उद्देश्य रहना चाहिए कि केवल गंगा को नहीं भारत वर्ष की समस्त नदियों को प्राकृतिक रूप में बहते हुए देखना चाहते है। यह उद्देश्य को पूरा करने के लिए इस लड़ाई को कैसे लड़ना पड़ेगा क्या करना पड़ेगा, जब हम अनशन पर हैं और काम पीछे रखना चाहिए। त्याग और तपस्या ही हमारी आत्मशक्ति बढ़ाता है। हमें बल देता है।
नदी के प्रवाहों को रोक देते है तो किनारें के पशु-पक्षी-वृक्षों का पानी रोक देते। उनको भी जल लेने का अधिकार है। हमारें सरकार जो करना चाहती है। उसको सरकार के टैक्निशायन भी उनके जैसा रिपोर्ट बनाकर देती है। क्यों पत्रकार इसका ठीक से प्रचार कर नहीं पाते है ? इसका भी हमें सोचना पड़ेगा।
पर्वतो से निकलने वाली गंगा का पानी पवित्र है। गंगा के पानी को कोई प्रदूषित नहीं करना सकता पहले उसमें बड़ी-बड़ी जलवायु मिलकर गंगा की प्रकृति बनी है। उसको अलग नहीं कर सकते है। हमारा मौलिक जल है वायु है इसी मौलिक रूप में गंगा है सरकार को बता दे इसपर किसी का अधिकार नहीं। जिस मौलिक रूप में गंगा का जल है उसी मौलिक रूप में रहे। हमारा विश्वास है सत्य की जय होती है।

घनश्याम जी - सत्य की खोज हम सब कर रहें है। सत्य की खोज करना सत्याग्रह का उद्देश्य है।

अरूण भाई पानी वाले बाबा - ५ाास्त्र के साथ-साथ गहरी समझ, गहरा दर्८ान प्रकृति की परिभा८ाा यह है। हम समझते है कि पानी ग्लेि८ायर से निकलता है। वहां से निकलता है और प्राकृतिक रूप धारण करता है। प्रकृति और पुरू८ा का समन्वय का संबंध यहां स्वामी जी प्रस्तुत किया पानी कैसे प्रकृति है पानी कैसे है पुरू८ा के साथ प्रदू८ाण के संबंध है। प्रकृति अपने आप में एक ५ाक्ति है।

प्रकृति मां है रूप है दर्८ान है आकार है रचना है। योगी बहता पानी यह दर्८ान पानी का चरित्र निर्मल रहता स्वच्छता का अहसास निर्मलता का अहसास है। पानी पर पहला अधिकार वृक्ष, चिडिया का अधिकार है। समुन्द्र में पानी नहीं जायेगा तो इस दे८ा की प्रकृति कैसे बचेगी।

आज इजिंनियर क्या कर रहें है। समुन्द्र में पानी नहीं जाना चाहिए। इस दे८ा के दो सिद्धान्त है बहता पानी और सेडिमेन्टे८ान। नदी का पानी समुन्द्र में जाता है। सेडिमेन्टे८ान बनता है। मिट्टी बनती है। पर्यावरण बनता है। बडिया से बडिया फल, फूल लगते है। ये देखना चाहिए समझना चाहिए। प्रकृति गति८ाील है। गंगा की प्रकृति में कितनी बड़ी ऊर्जा है। आज कठहल, करूल गंगा से है। यह गंगा का रूप है। हमारा ग्लेि८ायर जिस व्यापक का चेतना का संबंध प्रकृति का ऊर्जा का रूप धारण करती है वह टूटता जा रहा उसके संबंध उसका रूप सौन्दर्य रखना होगा समुन्द्र को पानी देना चाहिए। समुन्द्र का पानी पर पहला अधिकार ये हमें समझना चाहिए।

एस.राजू - सीख धर्म में गुरूद्वारों में या सभी धर्म में पेड़-पौधे, प्रकृति को बचाने के बारे में जानकारी देते हैं। 5-5 पेड़ पौधो इसके लगाने है और बच्चों को पौधे बाटने है ''आस्था के वृक्ष'' यह कैम्पेन है अभी 120 वृक्ष बांटे है लगाये है। गंगा कैम्पेन किया गंगा का गंगोत्री से लेकर गोमुख तक भम्रण किया।

दिने८ा भाई - बिहार में नदी संरक्षण के प्रयास हुए। गंगा के उपर भी सवाल को लेकर काफी प्रयास किये गये। नदियों के कई समूह अलग-अलग ढंग से काम संरक्षण चला रहें है। हाल ही में एक संकट सामने आया कि गंगा का जो लेवल खत्म गहराई कम होती जा रही है। बाढ़ का जो नया क्षेत्र है पहले से ही बढ़ गया, पहले लोग सबसे ज्यादा सूखा और पानी के लिए तडपते रहते थे वो भी एक बाढ़ का नया क्षेत्र बिहार बन रहा है। खासकर जहां पर डैम बन गये है, पूल बन गया है वहां की जो तराई क्षेत्र की खेती है वो खत्म हो रही है। दो इलाके पटना के असर का है लक्ससराय के आस-पास का बडिया के भागलपुर क्षेत्र में दो पार्ट में बटा हुआ पानी को निकालने का प्रयास बढ़ रहा है। इलाके में सिंचाई समस्या थी अब बाढ़ में डूब गया। देवधर में गंगा प्रवाह को रोका जा रहा है। उसके विरोध कर रहें है एक दिन का

सौद्गालवर्कर, पंडे और हम साथ मिलकर कर रहें है। पानी का प्रबन्ध लोगों के हाथ में है। आलोक जी है पटना से घनद्गयाम जी झारखंड से।

घनद्गयाम जी - गंगा बचाने के लिए एक कमेटी बनी है।

आलोक जी पटना -
10 जून का झाडुसा 12 जून को पटना में पीछले एक साल से पटना में झारखण्ड में कभी देवधर में बैठ रहें थे प्रयास कर रहें है। गये एक साल से इस जल की समस्या ने अलग-अलग जगह पर प्रयास करने वाले लोग एक साथ हो गये है। जितने भी जे.पी. आन्दोलन के जुड़े हुए लोग है, सब इक्कठठा होकर गंगा को अविरल बहने दो यह डा. जी.डी. अग्रवाल के आन्दोलन के साथ बड़ा आन्दोलन खड़ा हो सकता है क्या इसके लिए प्रयास कर रहें है। हम लोग सोद्गाल मूमेन्ट से जुडें सब लोग जून 1 तारीख को राजेन्द्र सिंह जी से बातचीत की और जून 12 तारीख को देवधर में प्रो. साह गंगोत्री से 7 बार पैदल आये ऐसे लोगों को जुड़ा बहुत एपीसियल हुए। राजेन्द्र सिंह जी का साथ देने आये। गंगा जी का यह गंदा पानी द्गिावजी पर कैसे चढायेंगे। लक्ष्मीनारायण के मंदिर में हम लोग बैठ गये सब विद्यार्थी, द्गिाक्षक लोग, पंडे गांव का समाज सब बैठ जुड़ गये। उस दिन इससे संघर्८ा रचना का समन्वय देखा। गंगा को अविरल बहने दो। नदियों का गांव के साथ संबंध है। गांव के किसान यही कहते है कि केवल पानी दे दो, देद्गा को कहां से कहां ले जायेंगे। जहां पर चार-चार नदियां बह रही है लेकिन वो सब सूख रही है। तो वहां का किसान क्या करेगा ? पानी का प्रबन्ध सही तरीका न होने की वजह से तालाब खत्म हो गया है हम इसके लिए प्रयास कर रहें है। इस ख्याल को धार्मिक आध्यत्मिक लोग कैसे जुडे जेपी आन्दोलन से जुडे स्वामी सत्यानन्द जी के काम बातचीत की इसतरह से किसानों को भी इस आन्दोलन के साथ जोड़कर 'गंगा को अविरल बहने दो' के लिए प्रयास कर रहें हैं।

प्रो. ए.के.सिंह, उत्तर प्रदेद्गा - बिहार में भूजल का स्तर कम होता जा रहा है। 50 सी.एम. आबादी बढ़ती जा रही थी। पानी के बारे में रूचि पैदा हुई। राज्य सरकार के लोगों को पानी के साथ जोड़ा जाए राजेन्द्र भाई के कहने पर हमने राज्य सरकार और केन्द्र सरकार के अधिकारियों के साथ एक वर्कद्गाप किया। 1 तारीख को राजेन्द्र भाई आये थे मई में सई नदी बिल्कुल सूख गई थी। यह नदी लखनऊ से जोहनपुर तक जाती है। वहां के जो गांव के लोग, लोकल मीडिया सरकार के भी लोग थे। उस सई नदी को कैसे पुनर्जीवित किया जाए। उसके लिए कमेटी बनाई हम लोगों ने गावों की परिस्थिति समझी और उसमें क्या-क्या कर सकते

उस पर विचार बना। डा. जी.डी. अग्रवाल का अनद्गान 13 जून को गंगा दद्गाहरा के दिन प्रारम्भ हो रहा है उसको गंगा बहाव को रोकने के विरूद्ध, गंगा के लिए लखनऊ में करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। लखनऊ में गंगा समाज के काम से हमने गोमती के किनारे 10-15 दिन तक उपवास 150 लोग बैठे। नदी संरक्षण पर मायावती कुछ कर नहीं रही थी। उसी के ऊपर एक विज्ञप्ति बनाकर जिलाधिकारी के माध्यम से मायावती को दे दिया और गंगा को अविरल बहने के बारे में एक निवेदन प्रधानमंत्री को भेज दिया। 14 तारीख को मायावती ने प्रैस वार्ता करके गोमती नदी के सफाई का प्रस्ताव दिया। 1999 में गोमती के किनारे लगातार प्रयास करते थे पिछले श्रमदान करते थे उसको साफ करने का प्रयास किया। लेकिन मायावती ने 14 तारीख को तुरन्त प्रैस वार्ता करके सफाई का प्रस्ताव दिया।

उत्तराखण्ड के साथी - हमने उत्तराखण्ड में अलग-अलग नदियों पर पदयात्राएं की। जितनी भी नदियों के संगठन है। उन्होंने अपने-अपने नदियों का जल लाकर जामनगर में 17 मई को सम्मेलन किया। 17 जून तारीख को उत्तराखण्ड में 280 हाईड्रो पावर के छोटे-बडे प्रोजेक्ट चल रहें है। उसका विरोध किया है। उसमें सरकार ने जमीन को ढीली करके प्रवाह को मोड रहें हाईड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए गंगा यहां अविरल बहती थी आवाज बहुत करती थी आज लुप्त हो गई है यहां। ऊपर से पानी आता है झील में चला जाता है। नीचे की जमीन सूखी रहती है। हमारी सरकार कहती है कि पहाड़ से पलायन हो रहा है। जब हमारी जमीन नहीं होगी, हमारा पानी नहीं होगा, तो हम लोग क्या करेंगे ? सोंग में बांध बन रहा वहां कम्पनी ने गांव में फूट डालने की कोद्गिाद्गा ५ाुरू की। तो वहां के गांव के लोगों ने जो लोग कम्पनी की तरफ थे उनकी बिरादरी से अलग करके उनका हुक्का पानी रोक दिया। लेकिन सरकार सुन नहीं रही है। दो बार सरकार को उस काम रोकना पड़ा लोगों को उस काम को रोका। अगर जी.डी. अग्रवाल वहां रहते तो हमारें आन्दोलन को सफलता मिलती। राजेन्द्र भाई हमारें पीछे साया की तरह खडे है ऐसे ही हमारे पीछे रहते है इसलिए यह आन्दोलन आगे बढ़ा और भी बढ़ता रहेगा।

मनीटा हेडा, महराट्र- दक्षिण की गंगा है दक्षिण गंगा कहा जाता गोदावरी नदी को। दो नदियां है उसमें से एक अडाण नदी है। नदी में जो मछली के आवास होते है हैबीटट नट हो गये है। नदी में प्रदूटाण बढ़ गया है। ५ाुगर फैक्ट्रीया जो वहां पर लगी हुई है। वो बिना ट्रीटमेन्ट गंदगी नदी में छोड़ देते है। बांध बनने इस सारे स्थिति का पहला वीक्टम कौन है ? मछुआरें जो हजारों साल से उस पर निर्भर है, वो कम हो रहे है। आज वो सुरत, मुबई जाते है। वहां पर मजदूर बन गये है। जिनके पास नदी थी, वो राजा थे वो आज दूसरो के मिलो में

से काम कर रहें हैं और लाभ किसको मिल रहां हैं ? फैक्ट्रीज़ के मालिक और बड़े किसानों को बांध बनने से लाभ मिल रहा है। आडान नदी को स्टेटस रिपोर्ट बन रही है। उसमें नदी के प्रमुख आयामों को की जानकारी इक्कठठा करेंगे। नदी के किनारे जो गांव है मछुआरों के वहां पर नदी संरक्षण समिति गठन करने का काम कर रहें है। इसमें मुख्यत: नौजवान रहेंगे और नदी के बारे में वो निर्णय लेंगे। अब कुछ गांव में जो समितियां बनाई है। उन्होंने तय किया है कि नदी किनारे स्टेज ऐसा तैयार करेंगे जहां पर वो मछली नहीं पकडेंगे। वो क्षेत्र फिद्गारिफ्यूजी क्षेत्र बतायेंगे। मछुआरों को नदी संरक्षण में जोड़ने के लिए उनके रोजगार के बारे में भी सोच रहे हैं। वहां पर लोगों ने बनाए हुए प्राचीन तालाब हैं, जो हिस्टोरिकल और इरिगेद्गान डिपार्टमेन्ट के हाथ में होते हैं। उन तालाबों हम कोद्गिाद्गा कर हैं, जहां पर इन लोगों की समितियां बनाई है, वो उन तालाबों को लीज पर लेंगे। इससे रोजगार मिल जायेगा और ये लोग नदी संरक्षण के लिए साथ भी हो जायेंगे। नदी न केवल बहता प्रवाह है, बल्कि यह ऐसी व्यवस्था है जो हजारो विभिन्न कड़ीयों में बांटी है। इसमें से एक कड़ी भी कम हो गया या खराब हो गया तो पूरी नदी की व्यवस्था बिगड़ जाती है।

.......उ. बिहार, मुज्जफरनगर - हमारे यहां गंगा, गंडक, बूढ़ी गंडक, पार्वती अदि नदियों के प्रकोप से हम लोग परेद्गाान रहते हैं। बहुत सी बाते हो रही हैं, नदी की सतह ऊपर हो रही है और यह सारी बाढ़ की जड़ मानी जा रही है। इस इलाके में पानी नदी से बाहर आ जाता है, वापस नदी में नही जाता है। बहुत बड़े क्षेत्र में जल जमाव हाता है, पानी 8-10 महिने खड़ा हो जाता है । पानी बहता रहना चाहिए समुद्र तक जाना चाहिए। यह समझ बहुत पुरानी है। इस सम्मेलन में हम बोल रहे है, नेचुरल डेवलपमेंन्ट के बारे में । यह सारी कडियां आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई है। किसी एक कड़ी को भी डिसटर्ब कर दिजिएगा तो सारा ओरबिट डिसटर्ब हो जाएगा। जो डेवलपमेन्ट आज हो रही है, वो अर्टिफिद्गियल है। इस लिए सस्टेन नही कर पा रहे हैं। इसलिए प्रकोप हो रहा है। नैचुरल डेवलपमेन्ट होनी चाहिए। जिनता चाहिए उतना लेने का सिद्धान्त हमने भुलाया हैं । जी. डी अग्रवाल जी ने जो बाते कही थी, ५ाायद ऐसी ही बाते, ऐसे संस्कार हर एक ने अपने परिवार में अपने बच्चों को देने चाहिए। यह ५ाुरूआत अपने परिवार से होनी चाहिए। पर्यावरण के साइन्टीसट, पर्यावरण पर काम करने वाले लोग, वो रातोरात रिपोर्ट बदलते है।

हम आज जलजमाव वाले क्षेत्र (वाटर लोगींग एरीया) के लोगों के साथ काम कर रहें हैं। नदी से आया हुआ पानी नदी में वापस कैसे चला जायेगा ? वो जानकारी हम वहां के लोगों से, किसानों से लेते हैं और उनकी मदत से उस काम को आगे ले जा रहे हैं। यह हमारी पहली

स्टेज है। हम आलोक रघुराय जी के साथ जुड़े हुए है। उनकी मदत से यह काम आगे ले जा रहें हैं। इसमें कामयाबी की कोई बात नही कर सकते। यह हमारा पहला कदम हैं। राजेन्द्र भाई का मार्गदर्शन पहले से ही मिल रहा है, ऐसे ही आगे मिलता रहेगा ऐसी आशा करता हुँ।

निर्मल भाई - वो सन्त, जिन्होंने गंगा-भगीरथी के ऊपर कब्जा करके अपने आश्रम गंगा नदी में बनाये हुए हैं और धार्मिक आस्थाओं के नाम पर गंगा -भगीरथी को बचाने वाले उन संतों का खेद व्यक्त करता हुँ। और उनके साथ डा. जी डी अग्रवाल जी का नाम जुडने से अग्रवाल जी का प्रभाव मण्डल कम हो गया है।

नदियाँ बचाने की बात कैसे सम्भव होगी? बांध कैसे रोके? गंगा में जाने वाली फेक्टरिज की गन्दगी को कैसे रोके? जीवन पद्धति को बदलने से नदी बच सकती है। पैसे के लिए काम करने वाले लोग, सरकारी लोग उनके भरोसे नदी बचने वाली नहीं है।

बहुत धाराओं के ऊपर काम करने वाले लोगों को इस नदी बचाने के काम में जोड़ने से नदी बच सकती है।

प्रो. एस प्रकाश - मुझे सबसे पहले राजेन्द्र सिंह द्वारा कार्य कृष्णा नदी पर दिया गया था। उस नदी में इस कदर प्रदूषण था कि उस पानी में जीवजंतु सांप भी मर जाते थे, बर्तन काले पड जाते थे। लोगों ने हमारा काफी साथ दिया और लोग आगे बढ़ते चले गये। लोग पहले से ही लड़ रहे थे। सरकार सुन नहीं रही थी । इसलिए उस समय हमने दूसरी नीति अपनाई। एक नरम दल और एक गरम दल बना कर प्रदूषण का विरोध हर स्तर पर किया। लीगल केस जीता। 2007 में यमुना के लिए कर रहे यमुना सत्याग्रह में बुलाया। उसमें भी लोगों ने साथ दिया। 13 जून से भगीरथी सत्याग्रह में रहा।

डा. सुरेश चन्द्र जैतपुर - हमारे गांव जैतपुर में ऐतिहासिक नदी है। उसने 1980 तक जैतपुर को पानी पिलाया। 45 कि मी की इस नदी में 6 बांध थे। बहती रहती थीं नहरें बन गई थी। कृषि होती थीं 1981 के बाद नदी सूखने लगीं उसपर बने सारे बांध टूट गये। पहाड़ से पानी इकट्ठा करने वाली नहरें टूट गई। 4 साल हम लोग उस पर काम कर रहे हैं।

...........बिहार - आज 'हम जल बिरादरी के लोग कुछ नहीं जानते, हमरे चाहिए नदी में पानी।' हमरे नदी का पानी जो दूषित करेगा, जो छिनेगा, हम सब मिलकर उसके पानी को

उतारने का काम करेंगे। चाहे वो पदाधिकारी हो, जो हों। हम नदी के पानी, गंगा हो, छोटी नदी हो सहायक नदी हो हम इस लड़ाई में आप लोगों के साथ है।

बिक्रम सिंह नारायण - वैसे पटना से हुँ, दिल्ली में रहता हुँ । अक्षरधाम मन्दिर के ठीक सामने पाण्ड्व नगर में मेरा मकान है, यमुना नदी पर। हम लोग जिस नदी से जुड़े हुए है उसके लिए भी हम लोगों को आन्दोलन करना पड़ रहा है। यह आज़ाद भारत के नागरिकों के लिए दुर्भाग्य और ५ारम की बात है। प्रधान मंत्री को ऐसे गन्दे नालों में डुब मरने लायक है। जो पण्डित अपने पवित्र नदी का पानी सर पर छिडकता है, ऐसे नदी में गन्दे नाले डालते है, सरकार जो मर्जी चाहे करती हैं, प्रधानमंत्री, रा८ट्रपति, मुख्यमंत्री पैसे देकर जो चाहिए, अपने मर्जी से कानून पास करती है। ये सब ५ार्मनाक बात है।

........योगाद्गास्त्री, दिल्ली - जन्म से लेकर मृत्यु तक जल की हमे जरुरत है। हमारे काम में आने वाले और जीवन का संरक्षण जल से ही होता है। पूरी दिल्ली में जितना हो सकता अपने द्गिविरों के माध्यम से जल के बारे में जनता को जगाता रहुंगा।

29.7.08

28.7.08 को हुए पहले दिन के सभाओं के बारे में बताते हुए प्रो. एम. एस. राठौड ने कहा कि नीर-नारी -नदी सत्र था इसमें महिलाओं की जल संरक्षण में भागीदारी बढ़ाने का था। अभी तक जल बिरादरी के अभियान में पुरु८ा ही आगे बढ़ रहें हैं। पानी के काम में महिलाओं की भागीदारी कैसे बढ़े? आज से हमने तय किया कि जल बिरादरी में, पानी के काम में महिलाओं की भागीदारी बढ़ायेंगे। यह सोचना ५ाुरु किया। आने वाले समय में उनके भागीदारी के बिना यह काम आगे नहीं बढ़ सकता।

हमारे केन्द्रिय कार्यालय में राज्य में काम कर रहे जल बिरादरी के सदस्य अगर अपने काम के बारे में जानकारी दे तो अच्छा रहेगा। तब समझ में आयेगा कि जल बिरादरी कहां सघर्८ा कर रही है? क्यूं कर रही है? संघर्८ा में क्या सीख मिली है? कहां क्या किया है? कहां संघर्८ा करने की जरूरत है? कहां समाज को जोड़ने की जरूरत है?

आज नदियों की बरबादी हो रही है। उनको रोकना है, इसको राज, समाज कोई भी मना नही कर रहा है। ये समस्या सभी जगह बढ़ रही है और आगे भी यह भयावह रुप लेगी। लेकिन

इसको कैसे करे? इस सम्मेलन से लोगों को आंदोलन से कैसे जोड़े? यह सम्मेलन से सीखना है। कल के सत्र में अध्यात्म से लेकर जमीन तक की बाते हुई। अकाल पानी के बारे में हमारे समाज में हमारे संस्कृति में, हमारे धर्म में वैदिक पुरानों में, बायबल, कुरान में जल के बारे में काफी कुछ जिक्र किया गया है। हर भाटाा में बरसात के बारे में लिखा हुआ है। उसका मूल हमारे अध्यात्म में है। हम जब एक्द्दान करते है, तब उसका आधार भी हमे चाहिए और वह आधार हमारे अध्यात्म में मिलता है।

घनद्दयाम, झारखण्ड़ - कल जो कुछ भी हुआ इसका संदेद्दा यह है कि अध्यात्मिकता, लोक परम्परा, और भौतिकता इस पर काफी चर्चा हुई। केन्द्र बिन्दू था भौतिकवादी परम्परा ने, मानसिकता ने, प्रक्रिया ने हमें, हमारी प्रकृति व संस्कृति से काटने की साजिद्दा की है। धरती मां, जो जीवन देती है। नदी मां, जो जीवन को सहेजती है और प्रकृति मां।

आज इस प्रकृति और नदी को भी भौतिक दृटिटकोण से बाजार की वस्तु मान लिया गया। मै आदिवासी इलाकों में काम करता रहता हुं। खासकर जी डी. अग्रवाल जी ने मूल्य की बात की, असंग्रह और अस्वाद की बाते की। कार्नवालिस ने स्थायी जमीन बदोबस्ती का कानून पास करके व्यक्ति के नाम पर स्थायी जमीन का बन्दोबस्त किया और व्यक्तित्ववाद को आगे बढाया। पहले जमीन समुदाय की हुआ करती थी। समाज तय करता था कि खेत में क्या करे? क्या बोये? आदि व्यवस्था करता था।

हम अगर पानी बचाने की, नदी बचाने की बात करते तो उन तमाम कानूनों को देखा जाए तो इन कानूनों ने नदियों को प्रतिबन्धित किया। 1901 से 1903 तक के कानूनों ने नदियों को प्रबन्धित करने की कोद्दिाद्दा की। नदियों को कानूनों में बन्द करके हमारी सामुदायिक परम्परा, कम्युनिटी लाइफ स्टाईल, कम्युनिटी लाइवलीहुड टूट करके व्यक्ति वाद में बंट जायें भौतिकवाद को बढ़ावा मिले। व्यक्ति की मनोवृति में बट जाये, व्यक्ति की प्रवृति बट जाये। पुंजी वाद को बढ़ावा दे। प्रकृति को वो भौतिक वस्तु मानते थे। इसलिए प्रकृति पर जो समाज का हक था वो छिन लिया गया। प्रकृति को हम भौतिक वस्तु नही मानते थे। सृटिट का एक ऐसा उपहार मानते थे, इसके बिना इन्सान की जीवन की कल्पना नही कर सकते। साफ है प्रकृति को हम भौतिक वस्तु नही मानते है । प्रकृति की रक्षा के क्रम में पानी का जमीन का जंगल का रक्षा करना यह हमारा सामुदायिक दायित्व है। इस दायित्व को निभाना है तो हमें अपनी परम्परा की अच्छाईयों से सीखते हुए आगे बढ़ना होगा।

दामोदर नदी को मारने के लिए राज्य सरकार व केन्द्र सरकार लगातार कोशिश कर रहे है और आदिवासी उनका लगातार विरोध करके नदी को बचा रहे है।

लोकसत्ता को संगठित करने की हमारी पूरी तैयारी होनी चाहिए। जमीन बचाना, जंगल बचाना, पानी बचाना यह हमारा मुख्य उद्देश्य, पहला दायित्व है।

जल बिरादरी एक अच्छा मंच हैं। हमारे जंगल को बचाने का, जल को बचाने का, जमीन को बचाने का काफी प्रयास हो रहे है। राजस्थान में लोग लड़ रहे हो, उत्तराखण्ड़ में लोग लड़ रहे हो, झारखण्ड़ में लोग लड़ रहे है । उनके बीच एक संवाद प्रस्थापित करना सकारात्मक, सक्रिय संवाद प्रस्थापित करना जरूरी है। इस संवाद के लिए जल बिरादरी एक महत्वपूर्ण मंच है। केवल एक व्यक्ति के लिए नही, एक समाज के लिए है।

जल बिरादरी में 15-35 वर्ष तक के युवाओं को लाना जरूरी है। युवाओं को लाने का मतलब लम्बे संघर्ष की शुरूआत करना। संविधान के चुनौती के लिए एक वैकल्पिक व्यवस्था बनानी होगी। राज्य सरकार में भी जो अपने विचार मानने वाले लोग है उनके साथ भी संवाद करने की जरूरत हैं मिडिया के लोगों को जोड़ना होगा। मिडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी, जब लड़ाई तेज होगी।

सबको अपनी -अपनी सीमा तोडनी होगी। सन्तों को अपनी सीमा, सरकार को अपनी सीमा तोड़नी होगी और समाज को भी अपनी सीमा तोडनी होगी। तभी तो हम सब प्रकृति की रक्षा कर सकते है और साधु-सन्त-समाज-सरकार सब मिलकर प्रकृति को बचा सकते है।

दूसरे दिन का प्रथम सत्र
राज, समाज और सन्त समागम

1. रमेश शर्मा, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान
2. प्रो. विक्रम सोनी, नैशनल फिजिकल लेबोरेटरी, नई दिल्ली
3. सन्त स्वामी ब्रहमचारी महाराज

रमेद्गा ५ार्मा - अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर डाल रहे हैं। बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा? आज सरकार अल्पमत में है। लोकतंत्र में सरकार अल्पमत होती हैं।वे समाज के प्रतिनिधि होते हैं।

हम सब लोग बहुत व्यवहारिक हो गये है। अव्यवहारिक बात में मुझे दम लगता है। जिस समाज में अव्यवहारिक लोग ज्यादा होते है, वो समाज चला करता है। बना करता है, भवि८य सुधरता है। वर्तमान सुधरता रहता है, भूत को साथ लेकर चलता है। जिस समय हम व्यवहारिक हो जाते है, वो पलपल जीते छन छन मरते है। मेरा अनहित क्या होगा? अव्यहारिक आदमी वर्तमान को देखता है। और व्यवहारिक सोचता है कि आज क्या मिलेगा? चाहे वो कृ८णा हो, ५ारयू हो, गंगा हो, यमुना हो, लेकिन आज क्या मिलेगा? ज़्यादा से ज़्यादा समाज में अव्यवहारिक पैदा हो जाए तो समाज का कल्याण हो जायेगा।

हमारे समाज में सोच बदलने की जरूरत है। हमारे समाज में भा८ाा, हर चीज में परिवर्तन करने की जरूरत है। किसी भी बदलाव के लिए सोच में परिवर्तत लाना जरूरी है। नदी बचाने की बात, सोच की बात, अव्यवहारिकता की बात, नारी को हम कैसे देखते है? नदी को हम केसे देखते है? हम नीर को कैसे देखते है? यह सब सोच का कमाल है। सोच बदलनी होगी। अकाल पहले दिमाग में था बाद में धरती आता है। नदी दिमाग में पहले मरती है, बाद में धरती मरती है। सोच का फरक है।

पनघट से मेरा संबंध टूट गया जब से टैब पर नहाना ५ाुरू किया। नदी से मेरा संबंध क्या है? दिल्ली के स्कूलों में कुछ बच्चे ऐसे है, जिन्होंने नदी का किनारा नहीं देखा। उनको यह मालूम नही की हम यमुना के किनारे हैं। इस ५ाहर की यह स्थिति है। पहले छोटे बच्चे बताते थे मेरा बाबा नदी पर नाहने जाता है, पानी वही से आता है। जैसे राजेन्द्र सिंह ने अपने किताब में कहा है वैसे मैं भी जब छोटा बच्चा था तो गंगा नदी में तैरता था। यह एक प्रक्रिया थी। यह सब हमारा हिस्सा था। लेकिन अब कुछ संबंध नही है। अब इस लिए सोच बदलने की जरूरत है। जहां मकान बन रहे है, नदी बीचो बीच निकलती है ऐसे भी उदाहरण इस दुनिया में है, तो क्या हम बांध पर रोक नही लगा सकते?

जब तक सोच नही बदलेगी, ५ाब्दों की सोच बदलनी पडेगी। विचार की दिद्गाा बदलनी पडेगी।

सरकार सबसे छोटी है, सन्त समाज उससे बड़ा है और समाज उनसे भी बड़ा है। इन तीनों का नम्बर लगाया जाए तो आंकडों से सरकार बहुत अल्प मत से है, सन्त समाज बहुत कम है, लेकिन प्रभाव बहुत ज्यादा है। जिम्मेवारी समाज की ज्यादा सन्तों की इतनी सी और सरकार की

जिम्मेदारी सबसे कम होनी चाहिए। हम उल्टा कर रहे है। सारी जिम्मेदारी सरकार की उसके बाद सन्तो की और सबसे बाद में समाज । समाज ने समाज को ही पिछे ढकेल दिया। हम ही ने उल्टा कर दिया । और समाज में सन्त होता था, घुमता फिरता रहता था। यहां तक अपनी बात कह देता था। वो जो भी कुछ करता था उसको ही मानता था। इन परिस्थितियों के संदर्भ में आप अगर सोचेंगे तो नदियों को बचाना की बात नही कर सकते। मां लेकर तो केवल बात करते है, नदी को लेकर नही बचाया जा सकता, न केवल नीर को लेकर बात नही कर सकते। सब चीजों को सांचना पडेगा।

इन परिस्थितियों में हम सत्याग्रह सन्त सरकार समाज की समागम की दृ८िट से सोचना चाहिए। राजेन्द्र सिंह जब भीकमपुरा में गये थे। उस समय के लिए वह अव्यहारिक बात थी। वहां बसना भी एक अव्यवहारिक बात थी। यह अव्यवहारिक बात करते हुए उन्हें क्या पता था कि 5-5 नदियाँ बहने लगेगी। मांगू पटेल ने फावडा दिया, खोदना ५ाुरू किया। पहला तालाब, फिर तालाबों की ५ाृंखला और फिर नदियों का बहना। यह सब अव्यवहारिक था। अगर हम पहले व्यवहारिक दृ८िट से देखते, इतना काम खोद दें इसमें तालाब हो जायेंगे आंकाड़ो का हिसाब लगाये तो यह काम नहीं होता। यह बाद का काम है पहला काम था खोदना, खोद दिया। कुओं में पानी आ गया। राज्य ने भी जाना, समाज ने भी जाना।
इस देश का राजनीति राम-दाम और माया पर फंसी हुई है। इस स्थिति में हमें बचाने के लिए सत्याग्रह के नये रूप सोचने पडेंगे। नये और तरीके सोचने पडेंगे, नये रास्ते बनाने पडेंगे, बने बनाये रास्तो पर अगर आप चलने की कोशिश सम्भव नहीं है। एकदम अव्यवहारिक गैर तरीके के एकदम लोग पागल होकर आ रहें है। जिस दिन आप पर उंगली उठेगी उस दिन मीडिया भी देखेगा या मत देखो। मीडिया ने राजेन्द्र सिंह को कब देखा मैग्सेसे अवार्ड मिला तब। जब वो फवडा चला रहा तो लोकल मीडिया का ध्यान नहीं था। हमे सत्याग्रह की तलाश करनी चाहिए।
नदियों के बीच में स्नान करने के लिए अपने बात दिखाने के लिए जायेंगे। करोड़ लोग गंगा के किनारे खडे हो जाए जानते है कुम्भ मेले में मगर उस समय मुख्यमंत्री वहीं रहेगी राज्यपाल आयेंगे पहली डुबकी वे लगायेंगी राज्यपाल लगायेंगे और बाद में हम लगायेंगे तभी ये नाला सुधर सकेगा।
यमुना की सफाई के लिए 1400 करोड़ रूपये लगाया मैं नहीं कहता वो खा गये मैं कहता हूं मैं खा गया हूं। नदी पैसे से नहीं सुधरेगी सोच से सुधरेगी, गडबड पहली सोच, दिमाग, अकल, मेरे में है। मुझे कोई कनसर्न नहीं है कि नदी को माला है पहाड है हवा हो मुझे कोई संबंध नहीं है। में जो मेरे हाथ पैर तोड दिये जायेंगे तो मैं उनका विरोध नहीं करूंगा कि

क्योंकि मै अपनी इच्छा से यह कर रहा हूं। तो मै उनको दो८ा क्यूं दूं। इसके लिए नए तौर तरीके ढूंढने चाहिए।
समाज-नदी-सरकार-सत्य सुधर सकेगा।

प्रो.राठौड़ साहब - समाज अपना रोल कब समझेगा ? उसको कौन समझाएगा ? पहले उसको दि८ाा दिखाने वाले बहुत लोग थे। आज समाज को दि८ाा दिखाने वाले लोग नहीं है। युनिवर्सिटी, ८िाक्षक, गांव से लेकर यूनिवर्सिटी तक सभी जगह पर समाज को कोई दि८ाा नहीं दे पा रहें है। कौन देगा समाज को दि८ाा ? किसकी जिम्मेदारी है समाज को दि८ाा देने में हमें दि८ाा देने वाला कब पैदा होगा ? यह महत्वपूर्ण वि८ाय है। चिंता का वि८ाय है। आज दि८ाा कौन दे मीडिया दे, रिसर्च दे ? कौन देगा समाज को दि८ाा ? उसमें संत समाज और सरकार की भूमिका क्या है ?
तीसरी बात है कि आज समाज सरकार और संत की भूमिका क्या है? इस नदी को बचाने में ?

राठौड साहब- सरकार दो रोल है जहां तक नीति बनाने का सवाल है। पानी की नीति बनाने की बात आती है एक रा८ट्रीय नीति है। जो स्टेट गवर्नमेन्ट के लिए वो अपनी-अपनी नीति बनाए और अपनी परिस्थिति के अनुरूप, परिस्थिति के अनुकूल है। उसको मेरे पास आठ राज्यों की वाटर पालिसी है, उसको देखा जाए तो नीति बनाए। हमारें दे८ा के आई.सी.एस. अधिकारी और जो अधिकारी है वो सिवाय दो पेज के प्रतिबल के अलावा जो केन्द्रिय वाटर पालिसी है वहीं की वहीं नीति है। जो कभी-कभी गाईड लाईन करना भी भारी पड़ जाता है। इससे अच्छा गाईड लाईन नहीं होती तो सरकार को अपने आप सोचना पड़ता है कि क्या नीति बनाये। कुछ नीति में रोल समाज का है। खासकर ऐसे आन्दोलनकारियों का है जैसे राजस्थान में पिछले 4 साल के प्रयासों के सुनने के बाद आज वो नीति बनी है वो 180 डिग्री उल्टी बनी है। पहल थे सप्लाय साईड सेन्ट्रलाईज कमांड एण्ड कन्ट्रोल मैनेजमेन्ट सिसटम निर्दे८ा उसका बिल्कुल उल्टा बना गया है। डिसट्रेलाईज कम्युनीटि ओरीएन्टेड बनाई जा सकती और रिसोर्स कैन्जरवे८ान को भी बात की जा सकती है।
दूसरा है कि टेक्निकल एडवाईस में बडा कन्फयूजन सरकार में पानी को डील करने वाले इतने डिपार्टमेन्ट है और सबकी अलग डयूटी है। कहीं एक इन्ट्रीगेटिड पालिसी बने ऐसी कोई सोच नहीं है। जहां ये कहते वर्ल्ड बैंक या, वर्ल्ड वाटर फोरम सबका एक प्रयास है कि एक इन्टीग्रेटेड वाटर पालिसी बने वो व्यवहारिक नहीं है। वो चल नहीं सकती है। हमारें पालिटीकल

सिनडोम में उसमें वो पोसबिल नहीं है। क्या करें ? इन्होंने जैसे कहा कि हमें अपनी नीति बनानी है, नई सोच लानी है, वो नई सोच की बात है। उदाहरण के तौर पर आपको दे रहां हूं कि अभी तक यह तय नहीं हो पाया कि किस नदी पर कितने एनीकट बने, कितने डैम बने ? बनाए चले जा रहें है। अभी तो नरेगा प्रोग्राम आया इसमें में भी पानी के काम करते है तो सब लोग ठेकेदारी में लग गये, पैसे भी आ रहें। तो अब उसमें पानी जाने का जो हाइड्रोलोजिकल सिस्टम पानी जाने का जो तंत्र हैं, उसको जगह-जगह रोक दिया। जैसे हमारे ५ारीर की जो हार्ट वेनस है छोटी वेनस है वैसे ही हाइड्रोलोजिकल सिस्टम है। पानी कैसे बहे, उसका प्रयास है हमारे पी.एच.डी. उसके लिए कुछ लिमिट डिफाईन नहीं किया और इरिगेद्दान डिपार्टमेन्ट वाले इनमें लड़ाई चलती है। ये डेम है एनीकट बन रहें है। इससे पानी नहीं आ रहा है। इंजिनियर्स कहते है उससे कोई फर्क नहीं पडता 10 प्रतिद्दात से ज्यादा पानी हम रोक नहीं सकते बारीद्दा आ जायेगी फलो आ जायेगा, ओवर फलो आ जायेगा। बरसात नहीं इसलिए नहीं है। दोनो में कन्फयूज कोई कहता है बनाओ, कोई कहता कि मत बनाओ। अब ये कौन समझायें ? उसके साथ जुड़ा हुआ ग्रांउड वाटर डिपार्टमेन्ट जो बिल्कुल स्पेस नहीं थी कि अब उसको जगह मिल गई। उसके पास नालेज है वो बता सकते है। उनके पास बहुत बडा रेकार्ड है। सबफैस वाटर का भी ग्राउड वाटर का भी क्योंकि टैक्नोलोजी है। इस जानकारी से लोगों की भी कोई सोच बने ऐसा कोई ध्यान नहीं दिया गया है। बताया नहीं जाता। सरकार का वाटर लिटरेसी प्रोग्रम जितनी भी टैक्नीकल इन्फोरमेद्दान द्वारा उसको कैसे लोगों तक पहुंचाया जाये व्यवहार में लाया जाए ? सरकार को समझाया जाये तो सोनी साहब पानी के बहुत सारे आयाम है उनपर प्रकाद्दा डालेंगे।

प्रो. राठौड जी अर्बनाजेद्दान हो रहा है। उसके कैसे कन्ट्रोल करें ? चेक करें ? अर्बनाजेद्दान के साथ ड्रिकिंग वाटर डिमांड भी बढ़ रही है। उनको कैसे पूरा करें ? सरकार को यह भी सोचना पड़ेगा कि बढ़ने ५ाहरीकरण को कैसे कहा तक लाया जायें ? कैसे सम्भव है ? दूसरा वेस्ट डिस्पोजल की बात जी है। हमारें संस्कारों में भी नहीं है, हम खुद ५ाुद्धि की रखे घर की सफाई करेंगे और कचरा बाहर डालेंगे। तो म्युनिसिपल कार्पोरेद्दान की जिम्मेदारी है कि उठाकर ले जाए। यह जो प्रवृति है उसको रोकने की जरूरत है। इससे लेकर इन्डस्ट्रीज उसमें वेस्ट डिस्पोजल को अनसाईटिफिंक वे से माईनिंग भी करो अनसाईन्टिफिक वे से कहीं पर भी कचरा डाल दो, यह सारा जो तंत्र है। उसमें सरकार की बहुत बडी जिम्मेदारी है। उसमें ऐसे नियम बनाने चाहिए, यह एक क्रिमनल एक्ट माना जाय। उसमें फांसी मेनेजर को नहीं डोनर को दी जाए। एक सिद्धांत बदलना पडेगा।

जी.डी.अग्रवाल साहब ने वाटर युटिलाईजेद्गान का मुददा उठाया था। देद्गा में वाटर युटिलाईजेद्गान करीब 80 से 85 प्रतिद्गात वाटर ईरिगेद्गान में जाता है। बाकी 8 प्रतिद्गात ड्रिकिंग वाटर को 1 प्रतिद्गात इडिंस्ट्री ईरिगेद्गान वाटर को हम रोक नहीं सकते क्यों इस पर सबसे ज्यादा प्रेद्गार है। खेती के बिना काम नहीं चलेगा तो इसके बारे में सोचना पड़ेगा ये डैम बनकर पानी युटीलाईज कितना करेंगे ? इसमें किसी का कोई इन्टरवेन्द्गान नहीं है। सरकार को सोचना पडेगा कि 85 प्रतिद्गात को कैसे रोके इससे हमारी नदियां कैसे बच सकती है ?
यह भी प्रद्गन उठता है कि सारे तंत्र को किसने खराब किया सरकार ने, समाज ने महात्माओं ने ? सरकार ने सही रोल तो परफोर्म किया क्या उसकी जो जिम्मेदारी थी वो सही ढ़ंग से पूरा करने की कोद्गिाद्गा को उसने रिर्सोस को मेनेजन नहीं बनाया। ओनर को बना दिया प्रद्गिाक्षण की बात बाद में आयी। प्राकृतिक खासतौर से साधनों का दोहन बढ़ गया। समझना है पैसा लेते है, जिस बजरी को आप बचाना चाहते है, सरकार उससे पैसा कमाना चाहती है। बजाय इसके महत्व को समझे बगैर नदी में पानी बचाने के लिए बजरी का होना कितनी महत्वपूर्ण है। बचायें।
संतो की वाणी विद्या है। वो ऐसी विद्या है जो प्रकृति जो जोड़ें बाकी सब अविद्या है। पानी को प्रकृति को मनेज करने के लिए सिद्धांत हमारे वेदों उपनिटादों में है उनको समाज क्यों नहीं पहुंचे ?

राठौड़-राजेन्द्र सिंह ने संत लोगों को कई साल पहले से भृतहरी जैसी स्थानों पर साधु-माहत्माओं के साथ द्गिाविर किये उनको लोगों को देने के लिए पेड़ भी देते रहें। पानी व्यवस्था का भी प्राकृतिक संवर्द्धन संरक्षण में कैसा उपयोग किया ? इसको राजेन्द्र सिंह से सिखना पडेगा। अगर संत ये बिडा उठाये वेद-पुराणों में जो प्राकृतिक संवर्द्धन संरक्षण के बारे में जो ज्ञान है। उनको लोगों तक संत सरल भाव में पहुंचाये संत ये क्यों नहीं कर सकते है। उसको अलग-अलग भाटाओं में भाटाांतरित करके दिया जाये लोगों को समझाया जाए। प्राकृतिक संसाधनों के पुछना ५ाुभ है। उनका लोगों तक पहुंचाये।

प्रो. विक्रम सोनी - जो संत रहता है, वो हिमालय के जैसे पहाड में रहता है, गंगोत्री में रहता। जैसे पानी बहता वैसे वो भी घुमाता नजर आया है। आजकल नदियों में बडे-बडे इन्फ्रास्टक्चर बन रहें है। हमारा धीर-धीरे प्रकृति से संबंध टूटता जा रहा है। जितने भी नेचुरल साईन्सेज है विज्ञान ने जितना किया है वो सब प्रकृति से ही सीखा। पहले केन्ब्रिज में नैचुरल फिलोसीपी का नेचुरल फिजिक्स की जो फैक्लटी थी, उसको कैब्रिंज नेचुरल फिलोसीपी की कहते थे। आजकल जो भी नेचुरल साईसेसे है, वो सब प्रकृति से जुड़े हुए है। सबकुछ नदी से या प्रकृति से

सीखते है। प्रकृति के साथ चाहे संत ही जिनका आध्यात्म के साथ संबंध है। उनका प्रकृति के साथ संबंध है।

ऐसी चीजे इंजिनियर उसमें जो बिगाड हो रहा है हमें क्या करना चाहिए ? हमें क्या नहीं करना चाहिए ? इसके बारे में हमें सोचना चाहिए। बात करनी चाहिए। पहले आप कुदरत के पास जाईये, कुदरत का थोडा सा सीखीए। सबसे बड़ा कार्य है वो कुदरत का है कुदरती है। उसमें ना प्रदूटाण है ना वेस्ट है। उसके बाद कारखाने बनाये टेक्नोलोजी लिजिए, इंडस्ट्री लिजिए, विज्ञान लिजिए, हम जो चीज बना रहें है उसमें यह नहीं सोचा कि हम वेस्ट कहां फेंके उसका क्या हुआ ? इन्हीं से ये प्रदूटाण और वेस्ट बढ़ रहा है। ये कुदरत का जो सिस्टम है, उसमें प्रदूटाण और वेस्ट कहीं भी दिखाई नहीं देता। इस चीज को हम लोगों ने सोचा नहीं।

संरक्षण के साथ जो एक दूसरी बात उसको विज्ञान को हम भूल नहीं सकता है। केवल संरक्षण करके कुछ भी नहीं होगा उसका अध्यात्म भी है, विज्ञान भी है उसको समझना पड़ेगा। क्योंकि लोग कहेंगे कि भाई आखिर नदी पर हमारा जीवन निर्भर है।

इस लिए हम लोगों को सोचना है नदियों के बारे में सोचना है कि नदियों से जो रिसोर्स मिलता है और उसकी व्यवस्था है नदियों का होना और उनका प्रयोग करेंगे उसे कितना फायदा है ? तो पहले जो नेचुरल रिसोर्स कुदरत के पास जो मिले है आप की हवा है आक्युफर्स जो होंगे इन संबंधी बरबादी नहीं करनी चाहिए उसका ज्यादा इस्तमाल नहीं करना।
अपना बाजार यहां नदी, हवा, नीचे एक्यूफर है उसको तोड देगा उसका तो असर आपके उपर एकदम पड़ता है। एक चीज है हम भूल रहें है जो क्लाईमेटचेन्ज है उसका 1⁄3 भाग आता है जंगल कटने से चाहे वो एिंाया में हो चाहे अमेझोनमें। उससे कार्बनडाई आक्साईड बढ़ जाती है वातावरण में वो उससे आयी है। दूसरा पानी की मुसिबत हो जाती है, आपके लिए पानी लाने के लिए उसकी व्यवस्था करने के लिए इतना खर्च करना पडेगा 1/3 भाग खर्च करना पडेगा। उस पर आगे से ध्यान रखना पडेगा कि हमारे पास जितने भी नेचुरल रिसोर्सस है बुर्जुगों की परम्परा है वो खत्म होते जा रहें है। एक बार नदी खत्म हो जाती तो उस रूप में वो वापस नहीं आती।
छोटी नदियां हो सकती है। आपके पास जो नेचुरल रिर्सोस है उसको एक बार आप खर्च कर देंगे तो खत्म हो जायेंगे। इसलिए सृटिट ने हमें जो दिया है, कुदरत का हमारें पास जो है उसको बचाकर रखना। इस क्लाईमेट को ठीक संरक्षण करना, इस्तमाल ठीक से करना रखना है।

इसका असर है। जैसे नेचुरल रिर्सोस के बारे में कहां है इनका संरक्षण करना चाहिए और उसके लिए हमने भी कुछ स्कीम दी है।
दूसरी बात जो खादर है हमारें नदियों के एक नहीं हजारों है उनपर तमिलनाडू बडे-बडे ५ाहर बसे हुए है। इन बडे-बडे ५ाहरों में पानी होता नहीं, सब नदियों को खत्म कर दिया। इन चीजों को बचाकर रखना उद्योग लाते है टैक्नोलोजी ऐसी होनी चाहिए प्रोडक्द्दान आप ऐसा निकलना चाहिए जिससे प्रदू८ाण कम हो, वेस्ट कम निकले। वो टैक्नोलोजी में अवगत नहीं हुआ है।
नदी हो, पानी हो, खादर का इस्तमाल अभी तक नहीं हुआ है उसमें पानी रहता है पहले उसकी जरूरत नहीं थी आबादी कम थी। खादर से यमुना का खादर उसमें इतना पानी जमाकर सकते है कि पूरे दिल्ली को पानी पिला सकते है खादर होना है हर साल बरसात में पानी आता है। उसको जमा कर लें भर लें और निकाल सकते है। खादर का मतलब फ्लडप्लेन उसको चाहे सम्भाल लें। इन चीजों बनाये अपना खादर भी बच जायेगा आप अपनी नदी भी जीवित कर सकते है। इसको कुदरती तौर पर इसकी जमा भी कर सकते है। उसमें आपका पर्यावरण बचेगा ऐसी स्कीम देकर हम लोगों को काम करना चाहिए।

ब्रहमचारी महाराज - महात्माओं को भी डयूटी बना रहे आप इसमें महात्माओं का भी दो८ा साबित होता है। महात्मा लोग तंत्रो-मंत्रो तक समिति रह गये। हमारे पास कोई आये तो हम बता देंगे ऐसा सोचते है। लेकिन कोई लोग है जो घूम घूम कर प्रचार करते हैं। द्दिाद्दु मंदिरों से लेकर कई विद्यालय है कांचीकामाकोटी विद्यालय है जो इसी बात पर चर्चा करते है। थोडी महात्माओं की कमी को उछलना भी कमी है। जो असली है वो आपके साथ है। हम भी आप के साथ है। लेकिन आज भी आपके सहयोग के लिए तैयार है। यमुना जी में जल नहीं था। हम लोग अनद्दान में बैठ जाये। गंगा दद्दाहरा के दिन गंगा जी में जल नहीं आया तो आमरण अनद्दान करेंगे। हमने डी.एम.साहब को कह दिया जब तक जल नहीं आता तब तक हम और आपके दरवाजे पर बैठ जायेंगे। करो या मरो कि स्थिति नहीं होगी तो किसी भी कार्य में सफल नहीं होंगे। हमारें बीच के जो संबंध प्रकृति के साथ जो संबंध थे वो टूट गया। हमारी ए.सी. में रहते है तो पिता अपने पुत्र को उगता हुआ सूरज कैसा होता है यह बताना भूल गया। दिल्ली जैसे बडे ५ाहर में यमुना कहां हैं कैसी थी ? दिल्ली ५ाहर यमुना पर बसा हुआ है यह सब भूल गये।

अध्यक्षा मधु किद्दवर जी प्लानिंग कमीद्दान की सलाहकार
वक्ता विवेक मसीह जी यंग क्रिद्दचन लीडर सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट

वक्ता अक्षरानन्द जी बलेनी आश्रम, उत्तरप्रदेश्‍ा

मधु किश्‍वर जी पानी को बचाना नदी को बचाना सब जन-जन तक कैसे पहुंचाया जाए। पानी की समस्या इस बात से ग्रस्त सभी है। हर घर में बीमारी डायरिया और उससे बचने के लिए जितने मर्जी बीसलेरी का पानी पिजीए, जितने मर्जी एक्वागार्ड लगाइए, वाटर बोतल लिजिए कोई बचा नहीं है। पृथ्वी या प्रकृति हमारे लिए एक रिसोर्स बनती रह गई पहले हमारी मां थी। अब इस मां को बचाने के लिए हमारी जरूरत है।

लेकिन जिसने कोई अच्छा काम किया सरकारी हो या साधु संत हो कोई भी हो उनको सही तरीके से प्रीन्ट करना है। इस तरीके से जैसे मायावती सरकार ने गोमती साफ करने का निर्णय लिया और दिसम्बर तक का टाईम रखा है उसको हमने समुदायिक अभिनन्दन इस प्रयास करना चाहिए। और उसमें एक कमी नागरिकों की भी भागीदारी समाज को नागरिकों इसमें इस्टीटयूश्‍ानल पार्टीश्‍िापेश्‍ान इस प्रयास में होने चाहिए। समाज में ऐसा भी समूह है। जो उसको समझ में नहीं आता है कि कहां से प्रयास ५ाुरू करें ? अगर हम समाज को इकठ्ठा करना चाहते है तो समुहिक कुछ प्रयास करना चाहते उनके छोटे-छोटे प्रयास से जैसे विक्रम सोनी छोटा सा प्रयास सामने रखा उसके साथ-साथ साईटिंस्ट भी अपनी छोटी-छोटी कुछ स्कीम्स बनाकर एश्‍िाया के लिए प्लान ऑन एक्श्‍ान दे कि क्यों हमारे क्षेत्र के लोगों को अपना मलमूत्र नदी में न छोडा जाए ऐसा ठोस विकल्प दे दिया वो सरकार से मांग कर सकते है।

इसके प्रीवेन्श्‍ान सीस्टम में छोटी-छोटी टुकडों में कार्य ५ाुरू करें, जिसके लिए हम लड़ सके सरकार की मनमानी और स्थिति में थोड़ा सुधार हो सकता है। हमने इतना बड़ा अन्याय किया है यमुना मां के साथ हम सोच नहीं सकते। अक्षरधाम ने प्रकृति के कानूनों के खिलाफ देश्‍ा के कानूनों के खिलाफ, पर्यावरण के कानूनों के खिलाफ अपना अमेडमेन्ट किया है।

पानी की लड़ाई, बडे-बडे आन्दोलन कहां से आती है। गांव से ५ाुरू हो जाती है ५ाहरों में आते है ५ाहर के लोगों को सोचना चाहिए गांव के लोग कितने एक्टीव होते है। उनमें सामुहिकता होती है। ५ाहर के लोग सिर्फ व्यक्तिगत सुझाव देते है। समाज तभी खड़ा होगा उसका लगेगा, यह हम कर सकते तब वो ५ाामिल हो जाता है। वो कैसे मोबीलाईज हो साईटिस्ट, एक्सपर्ट सब लोगों को ५ाामिल करना पड़ेगा।

विवेक मसीह - पानी को हर धर्म में बड़ा महत्व है। बायबल में पानी का महत्व है, वो बहुत ज्यादा है। जब बच्चा पैदा होता है। जब बच्चें का नामकरण या हम लोग उसको बाबतिस्मा कहते हैं। वो बाबतिस्मा में पानी जो वो भगवान है और पानी के द्वारा ही बच्चा पवित्र होगा। जब किसी की मृत्यु होती है तब उसके मुंह में पानी दिया जाता है। अगर हम बायबल में देखें तो जिजस क्राइस में कहां है कि आई एम वाटर ऑफ लाइफ 'मै जिंदगी का पानी हूं।' जो

कैसे पिना है वो कभी किसी को प्यासा नहीं रखता। इसका महत्व क्या है कि पानी जो है वो अलमोस्ट गोड। जैसे हम यमुना बुरी हालात है यह एक्सपर्ट वाली बात नहीं है। इसके बारे में कोई आम आदमी कुछ नहीं सोचता है। कुछ साल पहले निजामुददीन ब्रीज के दोनों तरफ उन्होंने जाल ऊंचा कर दिया था ताकि रिलीजियस पर्व में फूल फेकंने थे ताकि वो चोक नहीं। फूल भी अभी उसके ऊपर बाहर देखकर फेक देतें है। स्वामी जी से सुनकर बहुत अच्छा लगा करेंगे या मरेंगे ज्यादातर सब कहते है करो या मरो। यह ऐसी अच्छी विचारधारा सबके अन्दर आ गई तो अच्छा रहेगा। आप देखते है कि गुटके के छोटे-छोटे पैकेट होते है तो पानी फैकते है। तो पानी को पूरा जाम कर देते है। उसके लिए सरकार को दो८ा देते है सरकार दो८ाी है ही लेकिन एक हाथ से ताली नहीं बजती है। एक तो हमारा भी कर्तव्य है और सरकार का भी। जैसे इन्होंने बताया पानी हमारें समाज से जुड़ा हुआ है। समाज भी होगा तो पानी के साथ में। फैक्ट्री वाले इतने ज्यादा कन्स्ट्रकद्दान हो रहा है कि समझ में नहीं आ रहा है कि पानी का निकास कैसे करें ? पानी इतना पोल्युट किया हुआ है उसके उपर इतने केसेस आ जाते है। तो हम सब चीजों में मुझे इतना तो कहता है हम सब खुद जिम्मेदार है कोई एक दूसरे के उपर मत डालिए। हम सब जिम्मेदार है। लेकिन मै इतना ही कहूंगा आग और पानी सभी रिलीजन में उंचे स्थान पर है।

सी.एम. दत्ता - हम लोग बहुत प्रयास कर रहें है पानी समस्या का समाधान करने के लिए लेकिन उसमें बहुत सारे अभाव है, उसमें से सबसे बड़ा अभाव लोगों में जो व्यक्ति समाज को तैयार करते है उनको पूरी तरीके से पानी की जानकारी नहीं है। किसी अज्ञान व्यक्ति ने कहा कि दंजनतम ीं जव इम तमेचमबज दवज बवउउंदक ये मेरे ख्याल से समाज में अभी नहीं है हमें सीखना पड़ेगा। नेचर का कैसे रिस्पेक्ट किया जाये उस पर कमांड नहीं करना चाहिए। इकोनोमिक कम्पीटीद्दान के लिए और उनके सेल्फ रिस्पेक्ट के लिए वो हर तरीके से हर तरीके के उपयोग के लिए जो भी कुछ है वो सबसे पहले हमें ही मिले उसके बाद में किसी और को दे दों। किसी ने कहा है प्दजमसमबजक कपेजपदहनपेीमे इमजूममद चवेपइसम ंदक पउचवेपइसम ंदक तमेंवदे कपेजपदहनपजीमे इमजूममद `मदेपइसम ंदक `मदेमसमेण
इसमें चवेपइसम जीपदह बंद इम `मदेमसमे ंदक पउचवेपइसम बंद इम `मदेपइसम
आज जो जल संरक्षण का सारे दुनिया में सबको ये महसूस हो रहा है कि जल का अभाव है और इस जल अभाव को दूर करने के लिए सक्षम होना पड़ेगा। जल को इतना महत्वपूर्ण मानते है तो इस तरीके से अपने अन्दर मे भी एक कोनसीनैस लाकर इस महत्वपूर्ण जल को कैसे संरक्षित करना है।

आज मुझे बडा अच्छा लगा कि समाज-सरकार-संत समागम नदी संरक्षण में। हमारी यहां सबसे बडी समस्या है हमारे भारत व८र्ा में कि हमारी भारत व८र्ा की नदियों में किस में कितना पानी वस्तुत: उपलब्ध है। बहुत सारे आंकडे आते रहते है बहुत सारे योग आते रहते है कभी कुछ आंकडा मिलता है लेकिन अभी तक यह असेस नहीं कर पा रहा है। सरफेस वाटर ग्राउंड वाटर उसके भी आंकडे हमारे पास सही तरीके से उपलब्घ नहीं है। जहां तक नदियों कैसे बहाया जाए और उनको संरक्षित करने के लिए क्या उपयोग करना चाहिए ? जब हम कहते है इस नदी को हमें बचाना है, इस जल को हमें संरक्षित करना है। क्या हमने कभी सोचा है कि हम ये क्यों कह रहें हैं ? पानी को संरक्षित करने के लिए भी हमने वर्तमान के बारे में ज्यादा सोच रहें है। सबसे पहले हमारे अन्दर कोनसीनन्स लानी पडेगी। हम एक व्यापक विद्गो८ा के रूप में कितना जल चाहते है और कितना जल हमारे लिए एक व्यक्ति के लिए सफीसेन्ट है ? हमारे लिए हर एक व्यक्ति के लिए टेनडेसी है कि जल कम मिले तो हम यह नहीं सोचेंगे कि वाकई हमारे लिए कम है या सफीसेन्ट है। हमारी यह चेस्टा रहती है जल रोज 100 लीटर पानी मिलता है हम कहतें है क्यों उसे 1000 लीटर किया जाये ? और वो 1000 लीटर करने के लिए हम जो भी कुछ तरीके से साधन सामग्री जुटाते है कोद्गिाद्गा करते है। यह सब मानसिक प्रवृत्ति से हो रहा है और इस विकास की वजह से ही प्रदू८ाण, वेस्ट, प्रदू८ाित करने वाले सोलिड वेस्ट, लिकविड वेस्ट जा बढ़ रहें है वो सब इसी मानसिक विकास ही वजह से ही हो रहा है। इसी के लिए हमने एक प्रयास किया राजेन्द्र सिंह के साथ में लोगों को बताया कैसे जल संरक्षण करें ? ये जो तीन सरकारी संस्था है सेन्ट्रल वाटर बोर्ड, ग्राउंड वाटर बोर्ड, इण्डिया मैट्रोलोजिकल डिपार्टमेन्ट में एक रेनफोल असेस करने की कोद्गिाद्गा करता है, एक सरफेस वाटर ही देखता और एक नीचे जमीन में क्या हो रहा है ? देखना है लेकिन जब पानी गिरता है उसको मैट्रोलोजिकल डिपार्टमेन्ट असेस करता है उसके बाद वो कहते है पानी कहां जाता है उससे हमारा कोई संबंध नहीं है। चाहे समुन्द्र में, नाले में जाये, नदी में जाये इससे हमारा कोई मतलब नहीं हमारा काम सिर्फ कितना पानी गिर गया है यह देखना है सरफेस वाटर वाले यह कहते है कि हमारा सरफेस वाटर से मतलब है। हमारा कोई संबंध नही की ग्राउंड में कितना जा रहा है। ये कमी आज नहीं थी। ये कमी पिछले 40-50 साल से हो रही है। इस कमी को रोकने के लिए बहुत से प्रयत्न किये गये। इसमें यह ध्यान नहीं रखा गया कि समाज को क्या चाहिए। और समाज भी इतना अनभिज्ञ है कि समाज ने ये नहीं सोचा कि ये पानी आता है कहां से आता है ? ये पानी व्यवहार में लाना है तो किस लिए कहना है ? ये पानी कितना है या कितना उसका उपयोग करना चाहिए, कितना हम उपयोग कर सकते है ? किस तरह से उसका करना है। ये बहुत जरूरी है कि सरकार के जो भी कानून हो पोलिसीज हो उसमें समाज का पार्टीद्गिापेद्गान के लिए ही समाज में जागृती लानी पडेगी। ये पानी है क्या पानी कहां

से आता है पानी का उपयोग कैसे करना है ? जब में गांव चला जाता हूं अकादमी ईन्टरैस्ट से या पानी जैसे रिर्सोस का मैनेज करने के लिए कन्झर्व करने के लिए सिर्फ समागम एक तरीका हो सकता है। इस समागम के साथ ही कैसे मानसिक समागम तो सके ? जो इस रिर्सोस को कोपरेटिव एटीटयूड देकर के देख सकते है। किसी भी रिर्सोस को किसी भी ज्ञान को किसी भी देद्गा को बचाने के लिए तीन चीजों की बहुत जरूरत है। 1. प्यार 2. समय 3. ज्ञान इन तीनों का समागम सही ढंग से हो सके तो आप किसी भी रिर्सोस को किसी भी साधन को हम बचा सकते है। वो समागम तभी हो सकता है समाज में जो लोग व्यक्ति है वो पूरी तरीके से हार्दिकता से वो एक साथ एक जूट होकर के पूरी कोपरेटिव एटीटयूड लेकर के पूरी कोनस्स के साथ एक दूसरे के उपर अगुंलिया उठाने से काम नहीं चलेगा इसकी गलती है।
कैसे हम नदी को बचाये, कैसे हम रिर्सोस को बचाये क्यों बचाये उसका महत्व क्या है ? उसके लिए आप समाज करे, सरकार करे या संत करें लेकिन व्यक्ति में समझ लानी चाहिए आन्दोलन हो कुछ भी हो। जब यह आन्दोलन का मतलब तरफ वो समुन्द्र के तरह में हो या मुन८य के मन में हो आन्दोलन व्यक्ति के मन में नहीं उठेगा उसके लिए समाज को सरकार को संत को कोद्गिाद्गा करनी पडेगी। एक दूसरे के साथ पार्टीसिपेटन से यह हो सकता है इसके लिए कैसे एक दूसरे के कमी को, नकारात्मकता को समझे कैसे एक दूसरे के सकारात्मक आयामों को समझे ? तभी नदी का जल का संरक्षण पूरी तरीके से सम्भव हो सकता है।

मधुकिद्दवर - और ऐसी आपात स्थिति में बैठे है जवाब देही होगी। इस देद्गा में जवाबदेही होनी है चाहिए वैज्ञानिकों का इस देद्गा को नरक बनाने में वैज्ञानिको का काफी योगदान रहा है। तो उनकी जवाबदेही होनी चाहिए। एक तरफ डिसन्टरेटिड हो और दूसरी तरफ अलग-अलग डिपार्टमेंट में तालमेल हो ये हमारी आन्दोलन की मांग हो। जो भी यहां है उन्होंने पानी जैसे डी.एफ. साहब को बाहर निकलने नहीं दिया वैसे और संत की एक हयूमन चेन बनाये जो तब तक हम बाहर नहीं जाने देंगे। इसके लिए एक ठोस सुझाव दे दिल्ली के लिए ही, दिल्ली के मेयर के लिए, कैसे जलव्यापी आन्दोलन ।

इब्राहिम हरियाणा जल बिरादरी हमारे यहां नदियां है नहीं।
आब-ए-ज़ज़्म के साथ गंगा का मानना दूनिया के अन्दर दो पवित्र जल है एक आब-ए-ज़ज़्म और दूसरा गंगा का जल। एक बात है आब-ए-ज़ज़्म बिक नहीं सकता। गुडगांव का डाक विभाग गंगाजल 200 एम.एल. का पाउच 10/- रूपये में बेचेगा। वो बेच रहा है। गंगाजल घर-घर तक पहुंचाया जाए बहुत अच्छी बात है। लेकिन गंगाजल का डाक खर्चा लिया जाए लेकिन गंगा जल का डाक खर्च लिया जाए लेकिन गंगा जल की किमत नहीं लेंगे। गंगाजल

बेचना गलत है । जो जल पवित्र होता है उसको कोई किमत नहीं होती अनमोल होती है। गंगाजल ना बेचा जा सकता ना खरीदा जा सकता है। जहां नदियों की प्रदू८ाण की बात आती है वहां नि८कर्८ा निकलता है कि समाज है ज्यादा नदियों को खराब करने में दो८ाी है। जहां-जहां जो गांव लग रहे है नदियों के आस-पास वहां बस जो गंदगी फैला रहे है नदियों में वहां उन गांवों में धरना दिया जायेगा जब तक तुम गंदगी फैलाना बंद नहीं करेंगे तब तक हम नहीं उठेंगे न खायेंगे, न पियेंगे। समाज सुधर जायेगा तो मामला सुधर जायेगा। इंसान को और जीवों से ज्यादा अकल दी है तो हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। इसलिए पानी और सभी जीवों के लिए, पर्यावरण के लिए संरक्षण करना चाहिए। इस्लाम धर्म में पानी इस्तमाल ज्यादा होता है बार-बार नमाज पढ़ते है जिससे पहले वजु किया जाता, हाथ पैर धोये जाते है। इसमें भी इस्लाम ने हिदायत दे दिया कि तुम सेर सव्वा सेर पाने से ज्यादा पानी इस्तमाल नहीं करोगे। यहां तक कहा गया। अगर नदी के किनारे बैठे हो और उस वक्त वजु कर रहे हो तो एक हिस्से को तीन बार से ज्यादा धोने की इजाजत नहीं दी है। पानी के साथ जीव जन्तुओं का भी ख्याल रखना चाहिए।

चन्द्र६ोखर प्राण - आज की तारीख में जैसे संकट के हम देख वैसे केवल नदियों के नहीं है, जमीन के लिए है, जंगल के लिए है और हमारे लिए भी है। इस संकट का मूल क्या है ढूंढना पडेगा। नदी अपने आप में कोई अलग एरिया होता कम्पार्टमेन्ट होना ५ाायद हम अलग संकटो पर बात करते। समाज और सरकार उस रि६ते की बात करना चाहता हूं ५ाायद यह इस संकट का मूल कारण है। समाज और सरकार इस रि६ते को फिर से देख सके उस रि६ते हम की भूमिकाओं को नये सीरे से व्यवहारिक कर सके ५ाायद उस रि६ते में कुछ नया रास्ता निकल आयेगा। एक आदमी का दूसरे आदमी के साथ संबंध होता है वो संबंध तीन स्तर का है।

1. मनु८य का मनु८य के साथ
2. मनु८य का प्रकृति के साथ
3. मनु८य का नदियों के साथ संबंध
4. मनु८य का धरती के साथ संबंध

ये सारा संबंध से ही मनु८य समाज बनाना है। जब हम समाज कहते है तो संबंधों की बात करते है।

चुनाव में दिल्ली के समाज की क्या भूमिका होगी ? पूरे दे६ा में समाज की भूमिका क्या होती है ये एक महत्वपूर्ण बिन्दू है। अगर समाज संबंध है। जे.पी. जिसको कहते थे सामुदायिक समाज है। भारतीय समाज। भारतीय समाज, सामुदायिक समाज है कोमन्यूटि बेस्ड है बिखरा हुआ नहीं है। उन संबंधों की संवेदन६ाील घटती जा रही है। और संवेदन६ाीलता घटती है और सरकार......

..समाज जितना टूटेगा सरकार की गठन की प्रक्रिया उतनी तेज होगी। समाज कितना टूटा हुआ है इस समाज की ताकत कितनी कमजोर हो गई है। दिल्ली का चुनाव आ रहा है उसमें यमुना सत्याग्रह का रोल कर सकता है ? राज क्या रोल करेगा ? वो एक्टीव हो जायेगी। समाज की भूमिका जो सरकार गठन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। सरकार समाज के लिए बनती है। समाज सरकार के गठन में सबसे ज्यादा जरूरी अखसार रहता है। सरकार के गठन में एक ऐसा हस्तक्षेप नहीं चुनाव में सीधे अपने मुद्दे उठा सकते है ? यमुना का मुद्दा पानी का मुद्दा लेकर समाज का अपना मुद्दा सरकार के सामने रख सकते है। समाज का अपना मुद्दा बन जाये उस पर सामुहिक बहस हो जाये। समाज में बैठे उस मुद्दे उठाये आने-वाले चुनाव के प्रत्याक्षी और सरकार के माध्यम से ५ाायद गम्भीर होंगे, नदियों के सवाल पर पानी के सवाल पर इसलिए सरकार और समाज के संबंध का सवाल उठाया है। टूटे हुआ समाज का बनना है संबंधों की नई डोर बनती है। इन सबका मूल यही है नदियों सफाई का सवाल, स्वच्छता, अतिक्रमण समाज की भूमिका बिना होनी चाहिए और सरकार की भूमिका पुत्र की भूमिका होनी चाहिए। यहां जो समाज-सरकार संत की समागम की भूमिका उठाई है उसमें जरूरी संबंधों की भूमिका महत्वपूर्ण है और संबंधों को ठीक करेंगे तभी नदी बच सकती है पानी बच सकता है। इस संबंधों की डोर को हम मजबूत बना सके संबंधों की नयी डोर बना सके।

विमल कुमार - जलबिरादरी के पूरे देक्ष से लोग आये हुए है सरकार को सक्रिय करने के लिए रणनीति बने।

1. इसकी रणनीति बडे समूह में नहीं बन सकती एक छोटा समूह बनाकर रणनीति बनाये बडे समूह की रणनीति ईटरोट से बाहर चली जाती है। वो रणनीति ऐसी बने की सरकार को देकर कन्फरमेक्षन लेना पडेगा। पार्टी के लोगों के पास मंत्रालय के पास टिकट बांटने वाले के पास जाना चाहिए।

2. दिल्ली के नीचे के गांव जो है लोग यमुना के प्रदू८ाण का विरोध करना चाहिए। या किसी मंत्री जी के पास जाकर एक छोटा सा ग्रुप जाकर बैठना चाहिए।

स्वामी अक्षरानन्द जी महाराज - मेरा आश्रम बलेनी गांव में हिंडन नदी के तट पर है उसी नदी का पानी आगरा और मथुरा को भी जाता है। पहले हिण्डन नदी का जल ऐसा सुन्दर था स्वच्छ साफ था। इसकी ऐसी भावना बनी हुई थी नदी में स्नान करके जल क्षिवजी पर चढ़ाते थे और पितरों को देते थे। उसमें गई साल से आन्दोलन चल रहा था। राजेन्द्र भाई साहब के कहने पर सहयोग किया था। महात्मा जी ने और एस.प्रकाक्ष जी ने इतना का डी.एम. को हिला दिया। पिछली साल में पानी पर समाज को जगाने वाली बात थी। चुनाव का बहि८कार किया

तो एस.पी. और बाकी सब लोग थे उन्होंने भी मान लिया कि पानी भी इस चुनाव का मुददा बनेगा और हिण्डन नदी की प्रदू८ाण के बारे में सोचेंगे। पोलियो की दवा पिलाने से मना कर दिया इसलिए रोज अगर हम गंदा पानी पीकर मर रहें है तो पोलियो की दवा क्या असर करेगी ? दो रास्ते है दिल्ली को कैसे जगाया जाये। दिल्ली सांसद, विधान सभा, लोक सभा इनको कहने से कुछ नहीं होगा यू.पी. का पानी किसी तरीके से बंद करा दो तो 24 घंटो में इनकी नानी याद आ जायेगी और सोती हुई जनता जग जायेगी इसी तरीके से केवल दिल्ली वालों का पानी बंद करा दो पता चल जायेगा हम लोग है क्या ?

करो या मरो वही कहते है हम सब करने पर विद्गवास रखते है।

जो एस. बाफना - नदी हमारे जीवन की लाईफ लाईन है। नदियों का संदेद्गा को उसको आगे बढ़ाना चाहिए। सब नदियों का जो बात करते है वो न करने अगर एक नदी की बात करे

1. नदी के ५ाुद्धिकरण करते है। उसको प्रदू८ाण भी कर सकते है अगर हमें सफलता हासिल करनी है तो सारी ताकत जो है एक नदी पर लगानी चाहिए। अगर गंगा का मुद्दा उठाया जा सकता है। गंगा में सफलता हासिल करें। प्रदू८ाण मुक्त कराने के लिए बड़े-बड़े प्रोजेक्ट रोकने के लिए प्रयास करेंगे तभी सफल हो सकते है।

2. जो भी प्रयास हो रहा है वो भी इस वे से हो रहा है कि जो भी प्रयास एक कोअर में होना चाहिए। गंगा सफाई या प्राजेक्ट रोकने के लिए सबका सहयोग होना चाहिए उसमें संघर्८ा की बात नहीं है। यह सब का काम है इसमें सबका सहयोग होना चाहिए। सबका काम है इसमें सब जाती पूरी कम्युनिटी पूरी ५ाक्ति लगाकर करना चाहिए।

4.प्रदू८ाण के प्रति जरूर यह सिद्धांत होना चाहिए कि कितना भी नुकसान हो जाए तो जो भी उसको सजा होना चाहिए।

5. जो भी काम हो रहा है वो सही ढंग से हो जाये ऐसे काम करे जिससे पैसा भी बचे और भी ठीक हो जाये।

दिनेद्गा भाई - इस पर्यावरण गंगा नदियों के सवाल जो भी आपको इद्गयू बनता है एक रा८ट्रीय स्तर पर प्रयास होना चाहिए जिससे पूरा नदियों का संकट है जो जल और दल-दल कहीं-कहीं नदी, नदी क्या संकट है उस पर रा८ट्रीय आन्दोलन होना चाहिए और नदियों पर जो संकट है उसका विरोध होना चाहिए।

यमुना सत्याग्रह को एक साल पूरा हो रहा है उसका मूल्याकंन होना चाहिए और भी नेटवर्किंग बढ़ाना चाहिए अगर चुनाव आ रहे है और सत्याग्रह को एक साल पूरा हो गया है रा८ट्रीय नेटवर्क बनाकर दबाव बनाना पड़ेगा और अलग-अलग जगह पर जो काम करना चाहते है उसको मीडिया कवरेज नहीं देना चाहता। आज यह स्थिति है जिस फैक्ट्री का पानी से नदी गन्दी होती

है, वहीं अखबार का सम्पादक, अखबार का सम्पादक नहीं है तो चेअरमेन हो रहा है तो उसकी बात तो मानना ही पडेगी।
आप जिस तरह का मूवमेन्ट चलाना चाहते है तो आपको अपना मीडिया तैयार करना पड़ेगा, एक विकल्प तैयार करना पड़ेगा, तभी आपकी बात मानी जायेगी। जब भी मीडिया खड़ा हुआ है, इसी तरह से मूवमेन्ट में खड़ा हुआ है। जो भी साथी हो उनका आदत डालनी पड़ेगी कि वे अपना रिपोर्ट खुद लिखे। अपना अलग सा अखबार चलाए जिससे जल, जंगल, जमीन, सिचाई, खेती, युवाओं के सवाल इन सारों को जोड़कर अपना खुद का अखबार चलाएंगे। इसमें अपना खुद संदेद्गा खुद ही लोगो तक पहुचायेंगे। ये तैयारी करनी पड़ेगी।

योगाचार्य जी - सरकार में ऐसे कौन से लोग है कि कलम उठाएंगे और कहेंगे की कर दो। भाई जी ने बताया कि लोगों की एक जमात प्रचार करते जाते थे गांवों में नदियों का बोध कराया जाता था। आज भी इस प्रकार पर्यावरण, जंगल को संगठन जगह-जगह जाना पडेगा जागरण अभियान करना चाहिए कम से कम नदी के आस-पास बसे गांव में द्गिविर लगाकर योगा के द्गिविर लगाकर या जिस किसी माध्यम से लोगों को जगाना चाहिए।

मनीड्ढा हेडा - नदियों में जो प्रदूड्ढाण हो रहा है उसकी वजह से उनको देखा जाये नदी बच जायेगी पानी रहेगा लेकिन उसे जो जीव जल है जो पूरी जैवविविधता है वो नड्ढट हो जायेगी तो उस पानी का क्या करें ? तो उसके बारे में हमें सोचना पडेगा।
इरिगेद्गान के बारे में 80 प्रतिद्गात पानी खर्च हो जाता है। हम जो आज इरिगेद्गान सीस्टीक 3000 पुरानी पानी को वेस्ट करने वाली सिस्टम है। उसको छोडना पडेगा और ऐसी इरीगेद्गान सिस्टम लायी जाए जिसमें पानी का उपयोग कह हो।
नदियों के बारे में पोलिसी बनाने की बात है तो क्या ऐसी सोलिड पोलिसी बनाना पोसिबल है ? क्योंकि नेचर उसका डायनमिक है इतना बदलता है इसलिए किसी स्पिसीफिक सल में न बांधी जाए और पूरे देद्गा के नदियों के लिए एक ही पोलिसी न हो। प्रकृति दो तरह की है। कॉम्पलैक्स सिस्टम और सिम्पल सिस्टम और सिम्पल सिस्टम जल्दी समझ में आती है। और कॉम्लैक्स सिस्टम बदलती रहती है। पूरे देद्गा के लिए पोलिसी न बनाए जाए बेसीन वाईस पोलिसी बनाए। केवल पानी के डिपार्टमेन्ट के साथ पर्यावरण विभाग भी जोड़ना चाहिए। नदी को साफ करने की बात कर रहें है। तो प्रदूड्ढाण जल्द से जल्द कैसे दूर किया जाए इसके बारे में हम सोच रहे है इसके अलावा नदी को साफ रखने के लिए देखना पडेगा। नदी के किनारो पर बसे हर गांव में एक समिति बनाकर अध्ययन करेंगे।

हर नदी का अध्ययन होना चाहिए। कहीं हैबिटेट न८ट हो रहें नदी की समस्या, नदी के बारे में जानकारी हैबिटेट के बारे में जानकारी देना वाली एक स्टेटस रिपोर्ट तैयार हो।

मधु किद्वर वर्तमान के बारे में हमारा ज्ञान इसके लिए सोचना है कि अपनी परम्पराओं से काफी कुछ सीखे पुराने परम्परा से आदान-प्रदान करके कुछ हो सकता है। हम ये न समझे कि पुरानी बातों से क्या सीखना है ? अतित से सीखकर ही आगे वर्तमान के बारे में सोच सकते है। ये आदान प्रदान होना चाहिए। दो पिढीयां भी एक दूसरे से सीखती है। ये आदान प्रदान होना चाहिए। हम परम्पराओं की डूबने की बात नहीं कर रहें है। लेकिन अच्छी परम्परा को साथ लेकर चलने में कोई बुराई नहीं है। अगर हमने परम्पराओं से क्या सीखता? ये सोचेंगे तो हमारे फिलोसोफी का डिसरीस्पैक्ट होगा। आपका अतित वर्तमान और भवि८य एक दूसरे से जुडेंगे। तो सबको साथ लेकर चलेंगे तो अच्छा रहेगा। वाल्मिकी के रामायण की भी हम नकार नहीं सकते। हमे वाल्मिकी रामायण को साथ लेकर ही तो चलना पडेगा।

हिण्डन नदी के सत्याग्रही ने बताया कि जितनी भी नदियां हो उनका साफ करने का कानून हो और जितनी फैक्ट्रीयां बन रही है उनकी गंदगी और किनारे की तरफ गंदगी नदियों में न डालें इसके लिए कायदे कानून हो। इसके बावजूद वो अगर वो गंदा कर रहें हैं तो उसको जनभागीदारी से रोक दिया जाए। नदियां भी सबकी है पद्गुओं, पक्षियों की पहले हिण्डन नदी इतनी साफ थी कि उसमें सिक्का डाल दें तो देख सकते थे। लेकिन आज उसका पानी इतना गंदा हो गया है कि पद्गु भी नहीं पी पाते। लोगों ने भी गंदा कर दिया।

हमें सत्याग्रह की डेफिनेद्गान बदलनी पडेगी इस तरह से सत्याग्रह पर बैठने से सरकार पर कुछ असर नहीं होगा। अक्षरधाम के बारे में मुझे कहना है ऐसी कन्स्ट्रक्द्गान नहीं होने दें।

यमुना इतनी सूख गई है उनके पद्गु लोग कहां जाये। इसपर सोचना पडेगा। खेती का रूख बदलना पडेगा जो धान जैसे खेती नहीं करके कम पानी वाली सरसो जैसी खेती करनी पडेगी।

गायत्री हरिद्वार - बहुत सारे लोगों को कहीं ये पता होता है कि समस्या क्या है क्या समाधान होना चाहिए ? और बहुत सारे लोगों पता होता है कि उसका समाधान क्या लेकिन उसको कैसे प्रत्यक्ष रूप में लाना है इसके लिए बहादुरी हिम्मत और मन की तैयारी सभी की नहीं होती। इसके साथ काम करना पडेगा और यह समस्या मामूली नहीं है। इस देद्गा को ५ाक्ति साधना कराने वाला कोई आयेगा। हमारे मन में यह विद्गवास है कि राजेन्द्र सिंह जी का यह आन्दोलन सफलता प्राप्त करेगा भले ही अव्यवहारिक लगता हो। भगवान की ताकत जुड जाती है तो कितनी ही समस्या दूर हो जाती है। यह बाईबल, कुरान, पुराणों में गुरूगोविन्द सिंह ने सभी धर्मो में कहा और ऐसी स्थिति में यह प्रक्रिया ५ाुरू हुई है। सहकारिता का भाव बढ़ रहा है ये

भाव आ रहा है कि प्रकृति को बचाना है। समय ज्यादा लग सकता है लेकिन कोई काम असफल नहीं हो सकता है।

जहां-जहां से गंगा यमुना या अन्य नदियां निकल रही है उन गावों को सूचीबद्ध करके उन गावों का चयन करके उन नदियों को ५ाुद्ध करने में सबसे बड़ा योगदान है वो है कि गावों को हमको केमिकल मुक्त करना है।
रसायनिक खाद जमीन में डालने से पानी चला जाता है और पानी दूटिात हो जाता है। इसके लिए गोबर का खाद डालना चाहिए, जिसमें पानी भी कम लगता है और केमिकल का असर नही होता। नदियों के किनारे जितने भी गांव है उनके पद्माुओं को गोबर का सही प्रबन्धन करना चाहिए इसके लिए हर गांव में पेड़ लगाने चाहिए। गोबर से खाद भी बनती और उर्जा भी बनती है इसके लिए इनका सही प्रबन्धन करना जरूरी है। आधे पानी में जैविक खेती हो जाएगी।

ग्रन्थी गुरू द्विवतेग सिंह - गुरू ग्रन्थ साहिब में पानी को अमृत कहा जाता है। पानी कहते है लेकिन ज्यादातर जोर अमृत पर है। सिक्ख धर्म में जितने भी तालाब और गुरूद्वारे बने है उसमें कोई गंदगी नहीं होती।
आज भी अगर नदियों को अपने धर्म के साथ जोड ले तो जितनी भी नदियां है वो अपने आप साफ होगी। गुरू ग्रंथ साहिब में पानी को बहुत महत्व दिया है। गुरू ग्रंथ साहेब लिखते है पानी पिता सब जगत का, पानी सबको पैदा करने वाला है। गुरू ग्रंथ साहेब में त्रिलोक की उत्पत्ति भी पानी से होगी। सबके दिल में यह बात बिठा दें, पानी हमारा जन्मदाता है कोई अपने पिता पर गंदगी लाद दें। तो ये हमारे पुरातन नदियां है उसको क्यों नहीं हम सफाई में ध्यान देते ? गुरू ग्रंथ साहेब कहते है कि किसी तीर्थ को गलत भावना से व्यवहार नहीं किया गया। तीर्थ पर जाओ स्नान करने वहां परमात्मा का नाम लेते हो तो तुम्हारा स्नान होगा। तुम्हारा मन भी पवित्र होगा ५ाुद्ध होगा। नदी के पानी की महत्ता है। गुरू गोविंद सिह जी ने खालसा पर साजा था उस समय अमृत त्याग दिया था तो पानी नदी से मंगवाया था। नदी से पानी आया था। नदी का पानी प्रकृति की देन है। गुरू ग्रंथ साहिब मे 'निर्मल बूंद आकाद्गा की' सबसे पावन पवित्र पानी आकाद्गा का है और नदियों का पानी वो ही है। लेकिन खेल कहां पर बिगड गया है। गुरूजी कहते है निर्मल बूंद आकाद्गा की पड गई तो वो बेकार जब वो निर्मल बूंद पानी की थी आकाद्गा की थी वो गलत जगह पड गई वो बेकार हो गई।
इन नदियों को धर्म से जोड लो गंगा, चाहे यमुना इनके पानी को हम सबसे ज्यादा निर्मल मानते थे ५ाुद्ध मानते थे वैसी हो जायेगी जो पहली थी। एक नदी का संबंध हर एक मजहब के साथ

है। कोई भी मजहब हो खासकर के हिन्दूस्तान में उनका गहरा संबंध है नदियों से कोई ये सोचे कि इसका प्रचार हिन्दू में ही हो, सिक्ख धर्म की बात होती है तो हम जोर से कहते है कि हमें इन चीजों को बचाना चाहिए। यही निद्गानी है हमारे बड़ों पुरखों की अगर यही निद्गानी नहीं रहेगी। हमारी कितनी नदियां है। इनके किनारे हमारे धार्मिक स्थल है। हमारे गुरूजी का जन्म स्थान था गंगा के किनारे और हमारे गुरूजी अंतिम स्थान जहां पर उनकी मृत्यू हो गई थी वो नदी गोदावरी के किनारे। किसी गुरूद्वारे में गुरूग्रन्थी में बिना स्नान गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ नहीं किया होगा। अगर स्नान या वजु करते है पानी से। सबकी प्यास एक पानी से बुझाती है। पानी हमारा जीवन का आधार है और पानी हमारे जीवन अलग जरूरत है। हम इस पानी लड़ाई में बिल्कुल साथ चलेंगे कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चलेंगे।

सुझाव

हमारी सोच में पहले यो आना चाहिए जितनी नदी का हमारे धर्म से कोई संबंध है। अगर आप कहेंगे नदी हमारे धर्म का अंग है हमारे गंगा में हमारे यमुना में गंदगी करता है तो कह दो कि यह हमारे धर्म का अंग है हमारे धर्म को खराब किया जा रहा है। हमारे पास यह बहुत बडा हथियार है उपयोग करना है तो हमारे धार्मिक स्थानों के लिए हमारे पास नदी है, तालाब है, सरोवर है, इनके लिए हमें उपयोग करना चाहिए।

५ोखर सिंह - एडवोकेट दिल्ली - सरकार की तरफ से हम आद्गा करे कि वो नदियों की देखभाल करें अपने आप बेवकूफ बनाने की बात है। मै सुझावों से सहमत हूं गंगा को नैद्गानल रिवर बना लेना चाहिए। जितने भी रा८ट्रीय कानून है सब इस्तमाल करें लेकिन जो नदी की देखभाल है वो अपने हाथ में लेनी पडेगी।

सरकार किस तरह की संस्था सेटअप करें। ये काम हमारे हाथ में लेना होगा और सोचना पडेगा कि किस तरह की संस्था हम सेटअप करें ? पर्यावरण प्रोटेक्द्गान का कानून है जो काफी सालों के चल रहा है। इसमें ये प्रोसीजर है कि हम किसी भी एरिया को एक स्पेद्गाल प्रोटेकद्गान एरिया बना सकते है और उसको क्या होना चाहिए नहीं होना चाहिए इसके लिए सुझाव दे सकते है। पहले कोस्टल एरिया के लिए पर्यावरण प्रोटेकद्गान कानून था। सरकार कोद्गिाद्गा कर रही उसको हटा दें या कम कर दें। क्योंकि उसमें बहुत सारा रिस्टीक्द्गान है। इस तरह नदियों के लिए भी कर लेना चाहिए और जिनने भी एरिया में नदी और नदी के आस-पास जो एरियाज है उनमें ये रिस्ट्रीक्द्गान होने चाहिए। पर ये देखना कानून लागू हो रहा है ये हमारे हाथ में होगा लोगों के हाथ में होगा। सरकारी इन्सटीटयूद्गान पर छोडे वे देखे ये कानून लागू हो रहा है या नहीं वो नहीं हो सकता है।

ये जो सामाजिक जांच हो रही है उससे काफी कुछ पता चल रहा है। ऐसी ही इन नदियों की जांच होनी चाहिए। आपको यह सोचना है कि नदियों का प्रदूटाण कम करने में हम इसका कैसे इस्तेमाल कर सकते है ? प्रदूटाण की एक समस्या है दूसरी समस्या यह है कि नदियों से सारा पानी निकालते रहते है। इससे प्रदूटाण भी बढ़ता है और दी भी मर जाती है। नेद्दानल रिर्सोस काउटिंग जहां पर नदियों पानी का वेल्यू लगाया जाता उससे एक स्टडी बनी थी जो सरकार ने मानी नहीं कोई भी नदी हो उसमें कितना पानी चलना चाहिए ? नदी के अपने लोजिकल रिक्वायरमेन्ट से ये मिनिमम फ्लो जो है, वो साईटिंफिक तरीके से मिनिमम फ्लो जो है समझ लेना चाहिए। ये डैम बनाते है बांध बनाते उनका कहना था कि हम ड्रायेस्ट सीजन मे मिनिमम फ्लो तय करते है। जब बारिद्दा आती है नदी बढ़ती है तो काफी इकोलोजिकल फक्द्दान नदी में होते है, जो सिर्फ मिनिमम फलो जो ड्राय सीजन में उसको सोचकर चले उससे काफी नुकसान होता है। नदी का मिनिमम फ्लो देखना चाहिए साईटिस की रिपोर्ट देखने चाहिए। ये कानूनी मिनिमम फ्लो तय होना चाहिए। मेन्टेन होना चाहिए। अच्छी तरह चल रहा या नहीं। मिनिमम फ्लो मेन्टेन हो इसके लिए।

सुझाव

नदियों के आस-पास के एरिया गांव-गांव में सामाजिक जांच करनी चाहिए और 6 महिने में एक सोद्दाल आडिट सामाजिक जांच करनी चाहिए। इससे लोग इक्कठठे हो पहले डेटा वेरीफाय होना चाहिए पानी फ्लो क्या है ? प्रदूटाण क्या है ? फिर सारी चीजों की खुली चर्चा होनी चाहिए।

हर तीन महिने ये मिनिमम फलो मेन्टेन हो रहा है या नहीं कितना पानी जा रहा है सामाजिक जांच होनी चाहिए। जो सरप्लस फ्लो बारिद्दा के दिनों होता है। वो देखना उससे पहले लोगों की जो जरूरत है 50 ली. हो 40 ली. हो उसका अकाउंट अलग होना चाहिए। वर्टा पर 5000 ली सरफेस है उसमें 3000 ली. लोकल लोगों की नीड पूरी करने के लिए देना चाहते हो तो उसका बजट अलग से होना चाहिए। जो कुछ 2000 ली. बचता है वो आपको एडवोकेट करना है और गावों के लिए कारखाना बनना है ऐसा एक पूरा सिस्टिम बन सकता है। और उसका समाज एवं सोद्दाल आडिट होना चाहिए कि यह स्टिम सही चल रहा है या नहीं।

प्रद्गान्त भूटाण - नदियों की हालात क्यों हो गई उसके पीछे एक ही कारण है इस देद्गा का संचालन पैसो पर चल रहा है याने मुनाफे पर हर चीज को मुनाफे का जरीया बना दिया गया है। नदियों को भी, पानी को भी, अगर हमको नदियों को बचाना है । विद्दव बैंक किस तरह से पानी के बारे में बहुत सारी नीतियां चलाने की कोद्गिाद्गा करी है जिसका मुख्य स्तभ है पानी का नीजिकरण होना चाहिए । हम ये देखे हिन्दूस्तान में पानी या बिजली की नीति बनाने वाले लोग जो सरकारी संस्थाओं में बडे-बडे पदों पर काम कर रहें थे उनमें से कितने लोगों ने रिटायड्ढमेन्ट के बाद जे.पी. इन्डस्ट्रीज में नौकरी कर ली या कन्सलटैन्सी करते है? हम देखेंगे विद्दव बैंक में आपको नौकरी करने की जरूरत नहीं।

इन्वायरोमेन्ट प्रोटेक्द्गान कई कानून बन हुए है। इनवायरोमेन्टल इम्पॅक्ट असेसमेन्ट होना जरूरी होता है। उसकी पब्लिक हिअरिंग होगी। इसके बाद फिर उसमें जो ओबजेक्द्गान आयेंगे उसकी सुनवाई होगी। उसके बाद जो कमेटी मिनिस्टर आफ इनवायरोमेंट के अण्डर होती है। ये देखेगी कि इसके क्या क्या पर्यावरण पर असर हो रहे हैं। और सार्वजनिक हित में इस प्रोजेक्ट को लगाना चाहिए या नही। ये सब कानून बना हुआ है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस कानून को धीरे-धीरे कई तरीके से विफल किया गया। धीरे धीरे करके पूरा साइन्टिफिक केडर करीब-करीब खतम कर दिया गया।

सुझाव -

नदियों को सार्वजनिक इस्तमाल ठीक तरह से लाना सिर्फ नीजि मुनाफे से बचाना है एक नदियों की नीति बननी चाहिए वो तो हमको बनानी ही है। लेकिन ये कैसे अद्गुअर करें कि सरकार जो नीति बनाये वो सार्वजनिक हित में हो।

इसलिए हम लोग पानी नीति पानी की नीति की बात कर रहें है। हम लोग अपने हिसाब से नीतियां बनाकर दे देते है। मिनिमम फ्लो तैयार होना चाहिए। यमुना के फ्लड प्लेन पर कोई कन्सट्रक्द्गान नहीं होना चाहिए उसमें डिस्चार्ज है। इन्डस्ट्रीज के हस्तक्षेप नहीं होने चाहिए।

हम लोगों को इसका एक ९ाोर मचाना पडेगा कि जो लोग नीति बना रहे है। सरकार के साथ उन लोगों का इन कम्पनियों से विद्दव बैंक से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए। अगर किसी आगे पीछे रिटायर होने के बाद सरकार के लोगों को कोई हक नहीं होना चाहिए ऐसे कम्पनियों में संस्थाओं में नोकरी लेते या फिर उनमे कोई कन्सटेन्सी लेते। यह बात समझनी बहुत जरूरी है और इस पर हम लोगों को प्रोटेस्ट करना चाहिए।

इसलिए आज बड़ी सक्त जरूरत है किमिनिस्टरी में इनयारोंमेन्ट प्रोटेक्द्दान सचुरेटेड बाडी, इनवारोन्मेन्ट प्रोटेक्द्दान अथोरिटी के कानून बनाना चाहिए। इसके ऊपर एक अलग बिलकुल इनडिपेन्डन्ट, जो सरकार के ऊपर भी निर्भर नही हो। जिसके तहत अपनी एक्सपर्ट कमेटी हो। उनके पूरा एकसपर्ट केडर हो उनकी पूरी एथोरिटी बने। इनवायरोमेन्ट इम्पेक्ट असससेमेन्ट वो लोग करे उसको करें । इस तरह से ये लोग आज तय करते हैं। उसको ठीक करना जरूरी है।

हिमांद्दाु ठक्कर - नदी में पानी होना चाहिए । हमारे देद्दा में केन्द्र की सरकार कह देती है कि पानी का जो मुद्दा है वो राज्य का मुद्दा हैं। हमारा नही है। राज्यों का मुद्दा ले तो देद्दा के सभी राज्यों में एक ही राज्य ऐसा है कि उसने कायदा बनाया है कि नदी में पानी होना जरूरी है। नदी में काई बांध बने, कोई जल विद्युत, हाइड्रोपावर योजना बने, इरीगेद्दान के लिए या अन्य उपयोग के लिए नदी का पानी ले जाने का हो । ऐसी कोई भी योजना बने तो नदी में कम से कम 15 प्रतिद्दात फ्लो बहना जरूरी है। मध्य प्रदेद्दा में 2005 में ये कायदा बनाया गया था। आजतक पूरे देद्दा में एक ही राज्य है जिसमें यह कायदा बनाया है। लेकिन इस में मिनिमम फ्लो का 15 प्रतिद्दात छोड़ने की बात की गई थी। उसको कोर्ट में सिमला हाईकोर्ट में हिमाचल प्रदेद्दा हाईकोर्ट में हमारे भारत सरकार की एन एच पी सी - नेद्दानल हायड्रो पावर कार्पोरेद्दान ने केस किया गया। उस पेटीद्दान में लिखा है कि हमारे देद्दा में कोई भी कानून के मुताबिक नदी में पानी होना जरूरी नही है। इसलिए मध्य प्रदेद्दा का ये नोटिफिकेद्दान है वो अल्ट्रा वायरस है। कायदे के खिलाफ है। और एन एच पी सी ने हाईकार्ट में ये पेटीद्दान की तो उसको सपोर्ट किसने किया, पर्यावरण मंत्रालय ने। हमारे देद्दा में ऐसा कोई कानून नही है और जो 15 प्रतिद्दात कहा गया है, उसका कोई वैज्ञानिक आधार नही है। उस पर्यावरण मंत्रालय की कोई नीति नही है, नदी में पानी होना चाहिए या नही। हमें लगता है कि कायदे पर नही छोड़ा सकते।
हमारे देद्दा में जो सिंचाई होती है, उसका 2/3 पानी नही आता है, यह सिंचाई कोई बड़ी सिंचाई योजनाओं से बांधों से नही आता है। 2/3 सिंचाई जो होती है वो पानी भूजल से आता है और भूजल ही सही में हमारी जीवन रेखा है।

हमारे देद्दा में ऐसा कायदा नही है ऐसे हमारे देद्दा में भी नदियों के प्रदूटाण को रोकने का कायदा बनाया गया जो आज से 34 साल पहले 1974 में बना। यह कायदा है, नीति नही। नदियों में प्रदूटिात पानी नही छोड़ना यह नीतियों में भी कहा और उसके लिए कायदा भी है। उसके लिए पूरा तंत्र भी बनाया गया है। स्टेट पोल्युद्दान कन्ट्रोल बोर्ड है, सेन्ट्रल पोल्युद्दान कन्ट्रोल बोर्ड है। लेकिन इसके बावजूद हालत क्या है? ये कायदा, ये नीति, ये पोल्युद्दान कन्ट्रोल बोर्ड प्रदूटाण रोक पाये? नही रोक पाये। इसका कारण क्या है? प्रदूटाण रोकने में समाज का

कोई हक नही है। कायदे में नही, ना नीति में है, ना पोल्युद्दान कन्ट्रोल बोर्ड में, ये जो मद्दिानरी उसमें समाज का कोई स्थान नही है। खासकर नदी के पास जो लोग रहने वाले उनका सबसे बड़ा स्थान होना चाहिए । नदी जब प्रदूटित होती है तब सबसे ज्यादा और सबसे बड़ा प्रभाव उन लोगों पर पड़ता है। क्योंकि प्रदूटाण कन्ट्रोल के कायदे में, नीति में, प्रदूटाण कन्ट्रोल बोर्ड के मेकेनिजम में इन लोगों को बिलकुल स्थान नहीं है। इसलिए ये पूरा फेल गया है। देद्दा के 90 प्रतिद्दात योजनाओं के लिए जो इनवारोमेन्ट मेनेजमेन्ट प्लान और इनवारोमेन्ट क्लीअरेन्स जो पर्यावरण सेक्युरिटी के लिए जो कनडिद्दान दे दी जाती है उसका उपयोग कही नही होता। उसका कारण यह है कि इनवायरोमेन्ट मेनेजमेन्ट प्लान के इमप्लीमेन्टेद्दान में समाज का हिस्सा कही नहीं है। न उनके लिए कोइ जबाबदेही है, न उनका कोई पार्टीद्दिापेद्दान है। वो भी फल्युअर है।

सुझाव-

कोई ऐसा कोई नीति कोई कायदा होना जरूरी है। जो नदी में पानी होना जरूरी है। नदी का मिनिमम फ्लो तय करें।

गंगा नदी के लिए जो नीति बने। ये बहुत जरूरी है देद्दा की नदियों के लिए नीति होनी चाहिए। नदी के साथ समाज कैसा व्यवहार करेगा? नदी के साथ सरकार कैसा व्यवहार करेगी? नदी के साथ उद्योग आ गये तो क्या व्यवहार होना चाहिए? इसके बारे में कोई नीति बननी जरूरी है। उसमें समाज की भागीदारी हो ।

उस भूजल को जिससे 2/3 जमीन नदियों को जीवित रखना हो तो भी नदियों को जीवित रखना होगा। नदियों के बहुत उपयोग है। उसमें से एक महत्वपूर्ण उपयोग है कि नदी का पानी रिचार्ज करने का बहुत बड़ा काम करती है।

हमारे देद्दा की अन्न उत्पदन की जीवन रेखा को जीवित रखाना है तो उसके लिए नदी को जीवित रखना जरूरी है। तो हिमाचल की पोलिसी ने ये द्गुरूवात की लेकिन उसका उन्नतिकरण न हो उसके लिए हम और आप वैज्ञानिक तरिके से समाज के साथ मिलाकर ऐसी नीति और ऐसा कायदा भी बनाना चाहिए।

हम जब कायदा और नीति बनाने की बात करते तो ये ध्यान में रखना चाहिए कायदा और नीति जिसमें समाज को खासकर नदी के पास रहने वाले लोगों का बहुत बड़ा हिस्सा हो। उनके कायदे में उनके नीति में, उनके विकेन्द्रिकरण में।

इनवारोमेन्ट मेनेजमेन्ट प्लान हो, प्रदू८ाण कन्ट्रोल बोर्ड हो या नदी संरक्षण इसके लिए सबसे जरूरी है कि कम्युनिटी कन्ट्रोल में हो। इस तरीके से उस कायदे में उनको यह अधिकार होना चाहिए कि प्रदू८ाण करने वाले उस उद्योग का फेक्टरीज का काम रोकने की आर्डर कभी रोक सकते हैं।उस कम्युनिटी आर्डर का ऐसा कायदा होना चाहिए कि कायदे से उसको वजन होना चाहिए, स्वीकृती होनी चाहिए। उसका अमल होना चाहिए नही तो कार्ट में जाकर रोका जा सके।

कायदा और नीति की जरूरत नही है। ये जरूर बनाना जरूरी हे लेकिन इसका ध्यान नही रखेंगे तो सफल नही हो पायेंगे।

५ोखर सिंह जी- नदी और ग्राउड वाटर का क्या हाल हो रहा है? ये हमें देखना पडेगा। गांव -गांव में प्रदू८ाण कन्ट्रोल ग्रुप बने जिसमें नौजवानों की ज्यादा भागीदारी हो, वो रेग्युलर मानिटरिंग करेंगे। जो भी कानून है उसका इस्तमाल करना चाहिए और अगर उनका इस्तेमाल नही होता है तो उसमें बदलाव आना चाहिए। नये कानून बनाने चाहिए।

इस सम्मेलन में सरकार को ज्ञापन दी गई । उसके बारे में जानकारी देते हुए श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि गंगा नदी इस देद्गा के पर्यावरण के लिए बन्ध से ज्यादा जरूरी हैं।

सुबह मुल्यांकन के दौरान बात आ गया थी कि राज्यों वार सम्मेलन करेंगे। किस-किस राज्यों में कौन जलबिरादरी का सम्मेलन करना चाहते वो बतायेगे, तो अच्छा रहेगा।

आगे के कदम

मनी८ा हेडा, विदर्भ, महारा८ट्र - हमारी संस्था संवर्धन नाम की संस्था ने गांव मे स्टडी से लकर काम ५ाुरू किया है। विदर्भ में वहां के जो सरकारी लोग है उनके जानकारी के लिए, गांव के लोगों के प्रद्दन तथा नदी संरक्षण के बारे में जानकारी देने के लिए वहां एक जल बिरादरी का सम्मेलन रखना चाहते हैं। आप अपनी समय के अनुसार तारीख बतायेंगे तो उस समय रख सकते हैं।

ओमर सिंह, बागपत, राजस्थान - प्रकृति पानी ये तमाम चीजे यदि नही बचेगी तो इन्सान कहां बचेगा? तो इस बात को ये राजेन्द्र सिंह जी ने पूरे दुनिया को समझाया । उत्तरांचल में तमाम फेक्टरीज के उद्योगों को छूट दी जा रही है। गंगा को प्रदूटिात कर रहे है, अतिक्रमण कर रहे है, उनको पूरी खुली छूट दी जा रही है। विकास के नाम पर विनाध्। हो रहा है। उत्तरांचल हिमाचल ऐसी जगहों में लोग उद्योग लगाने नही, जमीन को घेर कर चोरी करने जाते हैं। क्याकि वहां टैक्स ज्यादा नही देना पडता है। उत्तरांचल, हिमाचल या प्रकृति के उन्नति वाले जो एरीया वहां टुरिजम ओर संवा के अलावा विकास के नाम पर अन्य बातों की बहस नही होनी चाहिए। मैं राजेन्द्र सिंह के साथ गंगा की मुक्ती के काम के लिए अपने आप को समर्पित करना चाहता हुँ। हमारे गांव के गंगा पास से होकर जाती है और यमुना वही से आती हैं वहां पर आपको आमंत्रित करना चाहता हुँ। हमारे यहां के नेताओं की युवाओं की ५ाक्ति ५ाराब और समाज विरोधी तमाम कामो में लगी रहती है। जगजीत नगर में मैं आपको आमंत्रित करता हुँ, वहां एक सम्मेलन करेंगे। आपको जो तारीख ठीक लगे बताइये, उसके जरीए युवा पीढ़ी को इस काम में लगाना चाहता हुँ।

अरविन्द सिंह, सम्पादक हरिभूमि, दिल्ली- कुछ साल पहले बुंदेल खण्ड और आजुबाजु के इलाकों में पानी की समस्या है, उसके देखा समझा। उसको कैसे है किया जाए? पुराने जमाने में बड़े-बड़े तालाब बनाये, जल संरक्षण के उपाय किये गये थे। उसका कैसे विनाध्। हुआ? उनको कैसे पुनर्जीवित किया जाए ? इसके बारेमें जागृता आनी चाहिए ऐसे चीजे किसानों के सामने लानी चाहिए। उससे काफी फायदा हो सकता है। इस आन्दोलन में राजनीतिज्ञ के साथ कला, संस्कृति इन सबको जोड़ बगैर काम नही चलेगा। राजनेताओं में ऐसे लोग तलाध्।ने की जरूरत है। बहुतसे विकल्प तलाध्।ने की जरूरत है।

मीडिया की भूमिका भी इसमें महत्वपूर्ण है। प्रदूटाण की बात, बेइमानी की बात बहुत सी बाते हो रही है। जनता की ऐसी ५ाक्ति है अगर वो खड़ हो जायेगी तो निध्चित तौर पर मीडिया को वहां जाना ही होगा। ठीक से आन्दोलन खड़ा करने के साथ मीडिया का ध्यान रखते हुए उनको उस तरह से खड़ा करना होगा, उनको कनवीस करने के लिए दस्तावेज बनाने पर्डेगे। दस्तावेज अलग-अलग प्रादेध्कि भाटााओं में होने चाहिए। प्रादेध्कि मीडिया को जोड़ना होगा। अंग्रेजी में भी दस्तावेज उपलब्ध कराने होंगे। क्योकि अंगेजी सजग और सक्रिय है। अखबार क्षेत्रीय होते जा रहे हैं। इस चीज को ध्यान में रखते हुए हमारे इलाकों की बात सभी जगह फैलाना चाहिए। गंगा संरक्षण व नदी संरक्षण का काम भी महत्वपूर्ण है। इसमें कोई असम्भ नहीं इसमें थोडा कार्य नीति को बदलना होगा और आंचलिक आन्दोलनों के लिए मीडिया को जोड़ना

होगा। हमस ब लोग आपके साथ हैं। हम सब लोगों से जो हो पायेगा, हमारे साथियों से जो हो पायेगा मैं करूंगा। दूसरा प्रस्ताव है जो मूल सवाल मैं एक रखुंगा । मैं चाहता हुँ कि नदी संरक्षण पर एक सम्मेलन हो जाए, जिसमें देद्गा भर की नदियाँ है, प्राकृतिक संसाधन है उनका एक स्टेटस पेपर मीडिया के सामने रखना चाहता हुँ। आपके सुविधानुसार समय तय करे। समान विचार धाराओं के लोगों को साथ लेकर सम्मेलन करेंगे। मेरा हरिभूमि अखबार है। जब भी कोई ऐसी बात होगी बताएंगे, तब हम आयेंगे। कायदे से मुझे सुनना चाहिए था।

नागर जी, गजरौला, उत्तर प्रदेद्गा - मैं बहुत बड़ा सौभग्यद्गाली हुँ, मुझे यहां आकर काफी जानकारी मिली। हमारे यहां बाढ़ का पानी आता है वो वापस नही जाता है। नदी में खेती का ठेका छुटता है तो 100/- रु बुग्गी होती है। और गांव के खेत में 3/4 फूट नीचे जाए तो वो ही रेत 15/- रु में मिलती है। इसलिए किसान अपने खेत से रेत लेता है। इसलिए नदी की जमीन ऊपर होती ज रही है। और किसान के खेत नीचे हो रहे है। उस रेत को नदी में से निकाल कर खेत में डाल दिया जाए तो किसान अपने खेत नही बिगाड़ेंगे। वहां पर प्रति बुग्गी सबसीडी दी जाए तो किसान बेरोजगार भाईयों को नदी से रेत निकालने का काम मिलेगा। नदी का तल नीचे हो जायेगा, किनारे के तल उॅचे हो जायेंगे। कौटिल्य ने अपनी नीति में नदियों की सफाई की बात की हैं नदियों की सफाइ का मतलब रेत होगा। उत्तर प्रदेद्गा के गजरौला में मेरे पिताजी की पुण्यतिथी पर आप को आमंत्रित कर रहा हुँ।

.............वाराणसी - काद्गाी घाट और वहां पर आने वाले टुरिस्ट की वजह से जो गंगा प्रदूटिात हो रही है। उसके बारेमें इस सम्मेलन में आने के बाद मेरी सोच सकारात्मक हो गई है। हम सोच रहे हैं लोगों में जागृति लाने के लिए दिवाली के बाद पुराने तालाब जो सूख गये हैं, नदी के आसपास जहां पानी की समस्या से लोग परेद्गाान है। वहां पर 'प्यासी मेरेथोन 'यात्रा निकालेंगे। और एक सम्मेलन करेंगे। उसमें जल बिरादरी के लोगों को आमंत्रित करना चाहुंगा।

..........जिन बांधों से पानी छोड़ रहें हैं, उसकी जानकारी पहले सभी गावों को देनी चाहिए। उसके साथ बरसात में पानी ज्यादा होने की वजह से पानी छोड देते है, जब बरसात के बाद पानी कम हो जाता है उस समय उस पानी को वापस नदी में डालने के लिए पाईप लगाने चाहिए।

अरविन्द कुद्गावाह - देद्गा के तमाम वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, गांव के लोग, सरकारी अधिकारी सबको साथ लेकर अक्टुबर में सम्मेलन करना चाहते हैं। इस साल हमने चित्रकुट में मंदाकिनी नदी की

सन्त लोगों से मिले और हमस न्त-महन्तों को साथ लेकर पदयात्रा करेंगे। इस साल में सई नदी के संरक्षण के लिए वातावरण बनाया। गंगा एकसप्रेस हाय वे के खिलाफ वातावरण बनाया। वहां के कुछ गांव के लोगों ने सरकारी अधिकारियों ने गंगा एकसप्रेस हायवे बनाने में सहयोग देने से मना कर दिया है। सई नदी और मंदाकिनी नदी के संरक्षण का काम ५ुारू किया है।

दिवान सिंह, दिल्ली - यमुना सत्याग्रह में बहुत कम लोग जुड़ रहे हैं। यमुना सत्याग्रह के दौरान बहुत यात्राएं की लोगों के साथ बातचीत की, स्कूल -कालेजों में जाकर प्रेजेन्टेद्गान दिये, लोगों को हर तरीके से जगाने की कोद्गिाद्गा कर रहे हैं। इस सत्याग्रह की वजह से दिल्ली के लोगों को यमुना के स्थिति के बारे में जानकारी तो हुई। दिल्ली के लोग अपने काम में इतने व्यस्त रहते है, वो बाहर निकलते ही नहीं। लेकिन अब लोग जागृत होने लगे हैं। सत्याग्रह में आना ५ुारू हुए है। सत्याग्रह के बारे में सोचना ५ुारू हुए है। यमुना सत्याग्रह चलाने को उद्‌देद्गय केवल दिल्ली को नही, पूरे देद्गा की नदियों को बचाने के लिए ५ुारू किया है, ऐसा मुझे लगता हैं। यमुना के नीचे के गांव में जागृति लाना जरूरी है। दिल्ली के लोग जो यमुना का साफ पानी लेते हैं और सारी गंदगी यमुना छोडते हैं । उसका असर नीचे के गांवों में होता है। उनका पानी प्रदूटित होता है।

सुझाव

लोग जागृत होकर दिल्ली द्वारा किये जाने वाले प्रदू८ाण को रोकने का प्रयास करेंगे, उसका विरोध करना चाहिए। वो अगर दिल्ली वालों का पानी रोकेंगे, और कहेंगे कि जब तक दिल्ली वाले अपनी गंदगी नदी में डालना रोकेगे नही तब तक दिल्ली से हम पानी नही आने देंगे ।

अरविन्द, गुजरात - नदी के संरक्षण के लिए प्रयास होने चाहिए। नदियों के प्रदू८ाण के बारे में उसपर होने वाले अतिक्रमण के बारेमें लोगों को जानकारी देना जरूरी है। बहुत कम लोग इसके बारे में जानते हैं। जैसे दिल्ली के अक्षरधाम मन्दिर के बारे में गुजरात के लोगों को काफी आकर्८ाण है। लेकिन उनका ये पता नही है कि यह मन्दिर कहा बना हुआ हैं, किस किमत पर बना हुआ है। देद्गा में

जल बिरादरी के लोग जो नदी बचाने के काफी अच्छे प्रयास कर रहे है इसकी जानकारी, देद्गा की नदियों के स्थिति के बारे में जानकारी, नदियों पर कहां क्या हो रहा है इसके बारे में जानकारी देने वाला जलबिरादरी की अपनी मासिक पत्रिका होनी चाहिए। वेब साईट बनाकर जानकारी देनी चाहिए।

राजेन्द्र यादव, हरियाणा - जैसे दिवान सिंह जी ने बताया कि दिल्ली के लोगों का पानी रोकना चाहिए मैं इससे सहमत हुँ और हरियाणा में हम लोगों को जरूर जागृत करेंगे और दिल्ली वालों को गन्दा पानी हम रोक देंगे। तभी दिल्ली वाले सक्रिय हो सकते है। तभी यमुना को बचाने में सहयोग कर सकते हैं।

राजेन्द्र सिंह - हम संतो की तरफ देखते थे। हमारें मन में यह था कि जो नदियां है उनको पवित्र रखने का काम इनको दे दिया है। इसलिए जहां से नदी ५ाुरू होती वहां पर मंदिर बनाया है, मस्जिद बनायी है, गुरूद्वारा बनाया है और जहां से ये नदी ५ाुरू होती है उसके बाल्य काल को कि९ाोरवस्था को, युवावस्था को जानकर समझकर, सहेजकर, संस्कार के साथ व्यवहार के साथ सुरक्षित रखें। लम्बे समय तक नदी को सुरक्षित रखा होगा। लोग भवि८य को जानते है उसी के ऊपर पहली जिम्मेदारी होती है कि वो भवि८य साझे संवर्धन की साझे संरक्षण की साझे प्रबंधन की। हमने गंगा से आरम्भ से लेकर जहां गंगा समुन्द्र में मिलती वहां तक उसकी तीन यात्राएं की। देखा गंगोत्री वहां सबसे पहला गंदा करने वाला आदमी नहीं वो संत है।
अंत तक जाते-जाते कितने भी ५ाहर, जिनमें गांव, जितना भी सभी तरह की गंदगी सब फैक्ट्री का गंद उसमें जा रहा है। जब संतो ने अपनी व्यवहार ५ाक्ति, अपने संस्कार थे, अपने विचार से अपनी ५ाक्ति को छिन लिया तो गंगा माई नदी को वो हाल हो गया। राजा वो बेखबर हो गया। समाज किसको डरेगा। चाहे वो लोकतंत्र हो यदि विद्यमान हो चाहे विद्यमान जन हो सब भूल गये। मेरे मन में संरक्षण पर राज-समाज व सरकार की भूमिका क्या है ? कब सुधरेगी मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

सुझाव

इसलिए मेरे मन में राज-समाज-संत समागम की इसलिए आया कि हम इनकी भूमिका अपने आप ढूंढ लें। जो है वो अपनी-अपनी भूमिका बताए। राज में सरकार चलाने वाले सैफुद्दीन सौज़ आने वाले थे वो नहीं आयें। वो क९मीर चले गयें है। तो मैंने सोचा कुछ सरकारी अधिकारी आ जायेंग। लेकिन सरकार के अधिकारी आयें न आयें ? सरकार को सलाह देने वाले आये है जो नीतियां बनाने वो लोग आज हमारे बीच आयें है। क्योंकि सरकार भी अपना पूरा स्टक्चर बनाए रखने के लिए सबको साथ रखती है।

इस समागम के बाद भारत की छोटी-छोटी नदियों को पुनर्जीवित करने का व्यवहारिक काम कर रहें है वो वापस कहीं लौटकर बजाय अपने काम बहुत बिखरे हुए रखें, भारत की नदियों को

पुनर्जीवित करने के लिए ५ाुद्ध व्यवहारिक रचना काम छोटी जगह से जाकर ५ाुरू करें। डा. सोनी अपने लेफटीनेन्ट गवर्रन को सलाह देते है।

अपनी मर्यादाओं में रहकर काम करने वाले सन्तों को, सरकार को, समाज को संकट के समय बाहर निकलना होगा। आज का दिन ५ाुरू करना है समाज-सन्त-राज की भूमिका पानी जंगल और प्रकृति को बचाने के लिए क्या बनती है? जो आज का संकट है उस संकट से प्रकृति को बचाने के लिए सन्त, राज ओर समाज क्या कर सकते है? आज का दिन खुद की भूमिका तला५ाने का दिन है।

मैं ये समझता हुँ कि अभी कमि५ार्यिलाजे५ान जो हो रहा है, लोगों के हक सब मर रहे हैं और नदिया प्रदू८ाण, अतिक्रमण की ५िाकार हो रही है। उसको रोकने वाली पोलीसी बननी चाहिए । इसके लिए ऐसा सिस्टम बनाना चाहिए, जो वो थाम सके। लेकिन थामने के लिए भी ताकत चाहिए विद्वान जनों की और जनदबाव जो उसको खड़ा कर सके। जिन जिन राज्यों में ५ोखर सिंह, हिमां५ाु ठक्कर जैसे समझ रखने वालों का एक ग्रुप बन जाये और साथ ही साथ आन्दोलन भी खड़ा हो जाये।

सरकार की उदासीनता के चलते इस नदी की स्थिति आज ५ाहर के एक बड़े कूडेदान में तबदील हो गयी है। इसमें जयपुर से गोनेर कस्बे तक के 20 स्थानों पर औद्योगिक एवं घरेलू अव५ो८ा गिरता है। साथ ही विभिन्न स्थानों पर ५ाहर का ठोस कचरा डाला जा रहा है। इनसे भूमिगत जल प्रदू८ाित हो रहा है। ५ाहर के दक्षिण-प५िचम इलाके के सैकड़ों गांव, पानी की कमी के साथ-साथ फलोराइड के पानी से प्रभावित तरह-तरह की बीमारियों की चपेट में आ रहें है।
1981 में ५ाहर में आये बाढ़ से नदी के सभी बांधों के साथ-साथ धारा के तटबन्ध भी टूट गये। लेकिन सरकार ने न तो टूटे बांधों की मरम्मत करवायी और न ही नदी की लम्बाई, चौड़ाई का सर्वेक्षण ही कराया। इसके कारण, नदी के पेटे में बस्तियां बसने लगी और अब तो विद्याधर नगर से अग्रवाल फार्म- मानसरोवर तक काफी बस्तियां पेटे में बस गयीं। साथ ही पेटे में साग-सब्जियों की खेती भी बड़े पैमाने पर की जा रही है। नाले गंदे पानी में सब्जियों की खेती के चलते लोगों को तरह-तरह की बीमारियों की गिरफत में ले लिया है।

क्यों जरूरी है द्रव्यवती नदी को बचाना :-

1. इससे ५ाहर के पानी को रीचार्ज करने में मदद मिलती है।
2. यह नेवटा, रामचन्द्रपुरा और चन्दलाई के बांधों के लिए वाटर केचमेन्ट एरिया का काम करता है।
3. यह नदी ५ाहर में, फैलने वाली गैसों खालकर कार्बनडाईऑक्साइड को सोखता है, इससे ५ाहर का तापमान कम करने में मदद मिलती है।
4. अचानक बाढ़ की स्थिति में पानी की निकासी का महत्वपूर्ण साधन है।
5. पानी के चलते बनने वाले जला९ाय प्रवासी पक्षियों के बसेरे का काम कर सकते है।
6. ढूण्ड नदी की प्रमुख ट्रिब्यूट्री है। यदि यह समाप्त हो गयी तो ढूण्ड में पानी की कमी हो जायेगी।

हम क्या चाहते है।

1. नदी के उद्गम से ढूण्ड नदी के मिलान तक इसकी लम्बाई-चौड़ाई का सर्वेक्षण कर उस पर हुये अतिक्रमण तत्काल हटायें जाये।
2. नाले उद्गम के कुण्ड़ों की सफाई की करा उसके आस-पास सघन वन क्षेत्र विकसित किया जाये। तथा इसके दोनों किनारों पर सघन वृक्षारोपण तथा बाग-बगिचों की स्थापना की जाये।
3. टूटे बांधों का निर्माण कराया जाये, ताकि इसे जल-ग्रहण क्षेत्र के रूप में विकसित किया जा सके।
4. नाले के पेटे सभी प्रकार की निर्माण गतिविधियों, ठोस कचरा डालने को तत्काल प्रभावी रूप से रोका जाये। नाले के पेटे को साफ कराया जाये।
5. औद्योगिक इकाईयों व कॉलोनियों से आने वाले प्रदू८ित पानी का ट्रीटमेन्ट प्लांट के जरिये साफकर नाले में छोडने की व्यवस्था की जाये।
6. नदी की जमीन निजी खातेदारी से निकाल कर नदी के खातेदारी में करने के लिए गजट नोटिफिके९ान जारी किया गया।
7. जे.डी.ए द्वारा बनाये गये प्लान को नाहरगढ़ की पहाड़ियों से ढूण्ड नदी के मिलान तक बना कर सुचारू रूप से लागू किया जाये।